उहुद के बाद की फ़ौजी मुहिमें

मुसलमानों के नाम और साख पर उहुद की नाकामी का बहुत बुरा असर पड़ा। उनकी हवा उखड़ गई और विरोधियों के दिलों से उनका रौब जाता रहा। इसके नतीजे में मुसलमानों की अन्दरूनी और बाहरी कठिनाइयों में बढ़ौत्तरी हो गई। मदीने पर हर ओर से ख़तरे मंडराने लगे। यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और बद्दुओं ने खुलकर दुश्मनी दिखाई और हर गिरोह ने मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश की, बल्कि यह उम्मीद भी करने लगा कि वह मुसलमानों का काम तमाम कर सकता है और उन्हें जड़-बुनियाद से उखाड़ सकता है।

चुनांचे इस ग़ज़वे पर अभी दो महीने भी नहीं गुज़रे थे कि बनू असद ने मदीना पर छापा मारने की तैयारी की। फिर सफ़र 04 हि० में अज़्ल और क़ारा के क़बीलों ने एक ऐसी मक्कारी भरी चाल चली कि दस सहाबा की क़ीमती जानें चली गईं।

और ठीक उसी महीने में रईस बनू आमिर ने इसी तरह की दग़ाबाज़ी के ज़रिए से सत्तर सहाबा किराम को शहीद करा दिया। यह घटना बेरे मऊना के नाम से मशहूर है।

इस बीच बनू नज़ीर भी खुली दुश्मनी दिखा चुके थे, यहां तक कि उन्होंने रबीउल अव्वल 04 हि० में ख़ुद नबी करीम सल्ल० को शहीद करने की कोशिश की।

इधर बनू ग़त्फ़ान की जुर्रात इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने जुमादल ऊला 04 हि० में मदीने पर हमले का प्रोग्राम बना लिया।

ग़रज़ मुसलमानों की जो साख ग़ज़वा उहद में उखड़ गई थी, उसके नतीजे में मुसलमान एक मुद्दत तक लगातार ख़तरों को झेलते रहे। लेकिन वह तो नबी करीम की हिक्मत थी, जिसने सारे ख़तरों का रुख़ फेरकर मुसलमानों का पुराना रौब वापस दिला दिया और उन्हें दोबारा उसी बुलन्दी पर पहुंचा दिया जहां वह पहले थे।

इस सिलसिले में आपका सबसे पहला क़दम हमरउल असद तक मुश्रिकों का पीछा करना था। इस कार्रवाई से आपकी फ़ौज़ की आबरू बड़ी हद तक बाक़ी रह गई, क्योंकि यह ऐसा प्रतिष्ठा और वीरता पर आधारित फ़ौजी क़दम था कि विरोधी, ख़ास तौर पर मुनाफ़िक़ों और यहूदियों का मुंह हैरत से खुला का खुला रह गया।

फिर आपने लगातार ऐसी जंगी कार्रवाइयां कीं कि उनसे मुसलमानों की सिर्फ़ पिछली हालत ही बहाल नहीं हुई, बल्कि उसमें और बढ़ौत्तरी हो गई। अगले पृष्ठों में इन्हीं का उल्लेख हो रहा है।

1. सरीया अबू सलमा

उहुद की लड़ाई के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ सबसे पहले बनू असद बिन ख़ुज़ैमा का क़बीला उठा। उसके बारे में मदीना में यह ख़बर पहुंची कि ख़ुवैलद के दो बेटे तलहा और सलमा अपनी क़ौम और अपने मानने वालों को लेकर बनू असद को रसूलुल्लाह पर हमले की दावत देते फिर रहे हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झट डेढ सौ अंसार और मुहाजिरों का एक दस्ता तैयार फ़रमाया और हज़रत अबू सलमा रज़ि० को उसका झंडा देकर सेनापति बनाकर रवाना कर दिया।

हज़रत अबू सलमा ने बनू असद के हरकत में आने से पहले ही उन पर इतना अचानक हमला किया कि वे भाग कर इधर-उधर बिखर गए। मुसलमानों ने उनके ऊंटों और बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया और सकुशल मदीना वापस आ गए। उन्हें आमने-सामने की लड़ाई भी नहीं लड़नी पड़ी।

यह सरीया मुहर्रम 04 हि० के चांद निकलने पर रवाना किया गया था। वापसी के बाद हज़रत अबू सलमा का एक घाव, जो उन्हें उहुद में लगा था, फूट पड़ा और उसकी वजह से वह जल्द ही वफ़ात पा गए।[1]

2. अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० की मुहिम

इसी माह मुहर्रम सन् 04 हि० की 5 तारीख़ को यह ख़बर मिली कि ख़ालिद बिन सुफ़ियान हुज़ली मुसलमानों पर हमला करने के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई के लिए अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से 18 दिन बाहर रहकर 23 मुहर्रम को वापस तशरीफ़ लाए। वह ख़ालिद को क़त्ल करके उसका सर भी साथ लाए थे। जब नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर होकर उन्होंने यह सर आपके सामने पेश किया तो आपने उन्हें एक डंडा दिया और फ़रमाया कि यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़ियामत के दिन निशानी रहेगा। चुनांचे जब उनकी वफ़ात का

1. ज़ादुल मआद, 2/108

वक़्त आया तो उन्होंने वसीयत की कि यह डंडा भी उनके साथ उनके कफ़न में लपेट दिया जाए।[1]

3. रजीअ का हादसा

इसी साल 04 हि० के सफ़र महीने में अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास अज़्ल और क़ारा के कुछ लोग हाज़िर हुए और ज़िक्र किया कि उनके अन्दर इस्लाम की कुछ चर्चा है, इसलिए आप उनके साथ कुछ लोगों को दीन सिखाने और कुरआन पढ़ाने के लिए रवाना फ़रमा दें।

आपने इब्ने इस्हाक़ के अनुसार 6 लोगों को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ दस लोगों को रवाना फ़रमाया और इब्ने इस्हाक़ के अनुसार मुर्सद बिन अबी मुर्सद ग़नवी को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब के नाना हज़रत आसिम बिन साबित को उनका अमीर मुक़र्रर फ़रमाया।

जब ये लोग राबिग़ और जद्दा के बीच क़बीला हुज़ैल के रजीअ नामी एक चश्मे पर पहुंचे, तो उन पर अज़्ल और क़ारा के उक्त लोगों ने क़बीला हुज़ैल की एक शाखा बनू लह्यान को चढ़ा दिया और बनू लह्यान के कई सौ तीरंदाज़ उनके पीछे लग गए और पद-चिह्नों को देख-देखकर उन्हें जा लिया। ये सहाबा किराम एक टीले पर चढ़ गए।

बनू लह्यान ने उन्हें घेर लिया और कहा, तुम्हारे लिए वचन है कि अगर हमारे पास उतर आओ, तो हम तुम्हारे किसी आदमी को क़त्ल नहीं करेंगे।

हज़रत आसिम ने उतरने से इंकार कर दिया और अपने साथियों समेत उनसे लड़ाई शुरू कर दी। सात आदमी शहीद हो गए और सिर्फ़ तीन आदमी हज़रत ख़ुबैब, ज़ैद बिन दस्ना और एक और सहाबी बाक़ी बचे।

अब फिर बनू लह्यान ने अपना वचन दोहराया और उस पर तीनों सहाबी उनके पास उतर कर आए, लेकिन उन्होंने क़ाबू पाते ही वचन भंग कर दिया और उन्हें अपनी कमानों की तांत से बांध लिया।

इस पर तीसरे सहाबी ने यह कहते हुए कि पहली बार ही वचन भंग कर दिया गया है, उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। उन्होंने खींच घसीट कर ले जाने की कोशिश की, लेकिन कामियाब न हुए, तो उन्हें क़त्ल कर दिया। हज़रत

1. ज़ादुल मआद, 2/109, इब्ने हिशाम 2/619, 620

ख़ुबैब और ज़ैद रज़ि० को ले जाकर बेच दिया। इन दोनों सहाबा ने बद्र के दिन मक्का के सरदारों को क़त्ल किया था।

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० कुछ दिनों मक्का वालों की क़ैद में रहे। फिर मक्का वालों ने उनके क़त्ल का इरादा किया और उन्हें हरम से बाहर तनईम ले गए। जब सूली पर चढ़ाना चाहा, तो उन्होंने फ़रमाया, मुझे छोड़ दो, ज़रा दो रक्अत नमाज़ पढ़ लूं।

मुश्रिकों ने छोड़ दिया और आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेर चुके तो फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! अगर तुम लोग यह न कहते कि जो कुछ कर रहा हूं, घबराहट की वजह से कर रहा हूं, तो मैं नमाज़ और कुछ लम्बी करता। इसके बाद फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इन्हें एक-एक करके गिन ले, फिर इन्हें बिखेरकर मारना और इनमें से किसी एक को बाक़ी न छोड़ना, फिर ये पद पढ़े—

'लोग मेरे चारों ओर गिरोह दर गिरोह जमा हो गए हैं, अपने क़बीलों को चढ़ा लाए हैं और बहुत बड़ी भीड़ जमा कर रखी है। अपने बेटों और औरतों को भी बुला लाए हैं और मुझे एक लम्बे मज़बूत तने के क़रीब कर दिया गया है। मैं अपनी बे-वतनी और बेकसी की शिकायत और अपनी क़त्लगाह के पास गिरोहों की जमा की हुई आफ़तों की फ़रियाद अल्लाह ही से कर रहा हूं।'

'ऐ अर्श वाले! मेरे ख़िलाफ़ दुश्मनों के जो इरादे हैं, उस पर मुझे सब्र दे। इन्होंने मुझे बोटी-बोटी कर दिया है और मेरी ख़ूराक बुरी हो गई है। इन्होंने मुझे कुफ़्र अपनाने को कहा है, हालांकि मौत इससे कमतर और आसान है।'

'मेरी आंखें आंसू के बिना उमंड आईं। मैं मुसलमान मारा जाऊं तो मुझे परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर क़त्ल हूंगा। यह तो अल्लाह की ज़ात के लिए है और वह चाहे तो बोटी-बोटी किए हुए अंगों के जोड़-जोड़ में बरकत दे।'

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने हज़रत ख़ुबैब से कहा, क्या तुम्हें यह बात पसन्द आएगी, कि (तुम्हारे बदले) मुहम्मद (सल्ल०) हमारे पास होते, हम उनकी गरदन मारते और तुम अपने बाल-बच्चों में रहते?

उन्होंने कहा, नहीं! अल्लाह की क़सम! मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने बाल-बच्चों में रहूं और (इसके बदले) मुहम्मद सल्ल० को, जहां आप हैं, वहीं रहते हुए कांटा चुभ जाए और वह आपको तक्लीफ़ दे।

इसके बाद मुश्रिकों ने उन्हें सूली पर लटका दिया और उनकी लाश की निगरानी के लिए आदमी मुक़र्रर कर दिए। लेकिन हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी

रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और रात में झांसा देकर लाश उठा ले गए और उसे दफ़न कर दिया।

हज़रत ख़ुबैब का हत्यारा उक़्बा बिन हारिस था। हज़रत ख़ुबैब ने उसके बाप हारिस को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था।

सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत ख़ुबैब पहले बुज़ुर्ग हैं, जिन्होंने क़त्ल के मौक़े पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा जारी किया। उन्हें क़ैद में देखा गया कि वह अंगूर के गुच्छे खा रहे थे, हालांकि उन दिनों मक्के में खजूर भी नहीं मिलती थी।

दूसरे सहाबी जो इस घटना में गिरफ़्तार हुए थे, यानी हज़रत ज़ैद बिन दसना, उन्हें सफ़वान बिन उमैया ने ख़रीद कर अपने बाप के बदले क़त्ल कर दिया।

क़ुरैश ने इस मक़्सद के लिए भी आदमी भेजे कि हज़रत आसिम के जिस्म का कोई टुकड़ा लाएं, जिससे उन्हें पहचाना जा सके, क्योंकि उन्होंने बद्र की लड़ाई में क़ुरैश के किसी बड़े आदमी को क़त्ल किया था, लेकिन अल्लाह ने उन पर भिड़ों का झुंड भेज दयिा, जिसने क़ुरैश के आदमियों से उनकी लाश की हिफ़ाज़त की और ये लोग उनका कोई हिस्सा हासिल करने पर क़ुदरत न पा सके।

वास्तव में हज़रत आसिम रज़ि० ने अल्लाह से यह अह्द व पैमान कर रखा था कि न उन्हें कोई मुश्रिक छुएगा, न वे किसी मुश्रिक को छुएंगे। बाद में जब हज़रत उमर रज़ि० को यह घटना मालूम हुई, तो फ़रमाया करते थे कि अल्लाह मोमिन बन्दे की हिफ़ाज़त उसकी वफ़ात के बाद भी करता है, जैसे उसकी ज़िंदगी में करता है।[1]

4. बेरे मऊना की दुर्घटना

जिस महीने रजीअ की घटना घटित हुई, ठीक उसी महीने बेरे मऊना की दुर्घटना भी हुई, जो रजीअ की घटना से कहीं ज़यादा संगीन थी।

इस घटना का सार यह है कि अबू बरा आमिर बिन मालिक, जो 'नेज़ों से खेलने वाला' की उपाधि से जाना जाता था, हुज़ूर सल्ल० की सेवा में मदीना आया। आपने उसे इस्लाम की दावत दी। उसने इस्लाम तो क़ुबूल नहीं किया, लेकिन दूरी भी नहीं अपनाई।

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप अपने साथियों को

---

1. इब्ने हिशाम 2/169-179, ज़ादुल मआद 2/9-10, सहीह बुख़ारी 2/568, 569, 585

दीन की दावत के लिए नज्द वालों के पास भेजें, तो मुझे उम्मीद है कि वे लोग आपकी दावत क़ुबूल कर लेंगे।

आपने फ़रमाया, मुझे अपने सहाबियों के बारे में नज्द वालों से ख़तरा है।

अबू बरा ने कहा, वे मेरी पनाह में होंगे।

इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ चालीस और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ सत्तर आदमियों को उसके साथ भेज दिया। सत्तर ही की रिवायत ठीक है।

मुंज़िर बिन अम्र को, जो बनू साइदा से ताल्लुक़ रखते थे और 'मौत के लिए आगे-आगे' की उपाधि से मशहूर थे, उनका अमीर बना दिया। ये लोग विद्वान, क़ारी और चुने हुए सहाबा रज़ि० में से थे। दिन में लकड़ियां काट कर उसके बदले सुफ़्फ़ा वालों के लिए अनाज ख़रीदते और क़ुरआन पढ़ते-पढ़ाते थे और रात में अल्लाह के हुज़ूर मुनाजात और नमाज़ के लिए खड़े हो जाते थे।

इस तरह चलते-चलाते मऊना के कुंएं पर जा पहुंचे। यह कुंवां बनू आमिर और हुर्रा बनी सुलैम के बीच एक भू-भाग में स्थित है।

वहां पड़ाव डालने के बाद इन सहाबा किराम ने उम्मे सुलैम के भाई हराम बिन मलहान को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त देकर ख़ुदा के दुश्मन आमिर बिन तुफ़ैल के पास रवाना किया, लेकिन उसने ख़त को देखा तक नहीं और एक आदमी को इशारा कर दिया, जिसने हज़रत हराम को पीछे से इस ज़ोर का नेज़ा मारा कि वह नेज़ा आर-पार हो गया।

ख़ून देखकर हज़रत हराम रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! काबा के रब की क़सम ! मैं कामियाब हो गया।

इसके बाद तुरन्त ही अल्लाह के उस दुश्मन आमिर ने बाक़ी सहाबा पर हमला करने के लिए अपने क़बीले बनू आमिर को आवाज़ दी, मगर उन्होंने अबू बरा की पनाह को देखते हुए उसकी आवाज़ पर कान न धरे। उधर से निराश होकर उस आदमी ने बनू सुलैम को आवाज़ दी। बनू सुलैम के तीन क़बीलों असीया, रअल और ज़कवान ने उस पर लब्बैक कहा और झट आकर इन सहाबा किरामं का घेराव कर लिया।

जवाब में सहाबा किराम ने भी लड़ाई की, मगर सबके सब शहीद हो गए, सिर्फ़ हज़रत क़ाब बिन ज़ैद बिन नज्जार रज़ियल्लाहु अन्हु ज़िंदा बचे। उन्हें शहीदों के बीच से घायल हालत में उठा लाया गया और वह ख़ंदक़ की लड़ाई तक ज़िंदा रहे।

इनके अलावा दो और सहाबा हज़रत अम्र बिन ज़मरी और हज़रत मुंज़िर

बिन उक़्बा बिन आमिर रज़ि० ऊंट चरा रहे थे। उन्होंने घटना-स्थल पर चिड़ियों को मंडलाते देखा, तो सीधे घटना-स्थल पर पहुंचे।

फिर हज़रत मुंज़िर तो अपने साथियों के साथ मिलकर मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए और हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को क़ैद कर लिया गया, लेकिन जब बताया गया कि उनका ताल्लुक़ क़बीला मुज़र से है तो आमिर ने उनके माथे के बाल कटवा कर अपनी मां की ओर से, जिस पर एक गरदन आज़ाद कराने की नज़्र थी, आज़ाद कर दिया।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० इस दर्दनाक दुर्घटना की ख़बर लेकर मदीना पहुंचे। सत्तर 'बड़े' मुसलमानों की शहादत का यह हादसा, जिसने उहुद की लड़ाई का चरका ताज़ा कर दिया और वह भी इस अन्तर के साथ कि उहुद के शहीद तो एक खुली हुई और आमने-सामने की लड़ाई में मारे गए थे, मगर ये बेचारे एक शर्मनाक ग़द्दारी की भेंट चढ़ गए।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी वापसी में क़नात घाटी पर स्थित जगह क़रक़रा पहुंचे तो एक पेड़ के साए में उतर पड़े। वहीं बनू किलाब के दो आदमी भी आकर उतर गए। जब वे बेख़बर सो रहे तो हज़रत अम्र बिन उमैया ने उन दोनों का अन्त कर दिया। उनका विचार था कि वह अपने साथियों का बदला ले रहे हैं, हालांकि उन दोनों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का समझौता था, पर हज़रत अम्र जानते न थे।

चुनांचे जब मदीना आकर उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपनी इस कार्रवाई की ख़बर दी, तो आपने फ़रमाया कि तुमने ऐसे दो आदमियों को क़त्ल किया है, जिनकी दियत मुझे अनिवार्य रूप से देनी होगी।

इसके बाद आप मुसलमानों और उनके यहूदी मित्रों से दियत वसूल करने में लग गए[1] और यही ग़ज़वा बनी नज़ीर की वजह बना, जैसा कि आगे आ रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० को मऊना और रजीअ की इन दुखद घटनाओं से, जो कुछ ही दिनों में आगे-पीछे घटी थीं[2], इतना दुख पहुंचा और आप इतने दुखी और बेचैन हुए[3] कि जिन क़ौमों और क़बीलों ने इन सहाबा किराम के साथ द्रोह

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/183-188, ज़ादुल मआद 2/109-110, सहीह बुख़ारी 2/584, 586
2. इब्ने साद ने लिखा है कि रजीअ और मऊना दोनों घटनाओं की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ही रात में मिली थी। (2/53)
3. इब्ने साद ने हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

और हत्या का यह दुर्व्यवहार किया था, आपने उन पर एक महीने तक बद-दुआ फ़रमाई।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत मिलती है कि जिन लोगों ने आपके सहाबा को बेरे मऊना पर शहीद किया था, आपने उन पर तीस दिन तक बद-दुआ की। आप फ़ज्र की नमाज़ में राल, ज़कवान, लह्यान और उसैया के लिए बद-दुआ करते थे और फ़रमाते थे कि असीमा ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की। अल्लाह ने इस बारे में अपने नबी पर क़ुरआन उतारा, जो बाद में निरस्त हो गया, वह क़ुरआन यह था, हमारी क़ौम को यह बतला दो कि अपने रब से मिले, तो वह हमसे राज़ी है और हम उससे राज़ी हैं।' इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपनी यह दुआ छोड़ दी।[1]

5. ग़ज़वा बनी नज़ीर

हम बता चुके हैं कि यहूदी इस्लाम और मुसलमानों से जलते-भुनते थे, मगर चूंकि वे मैदान के आदमी न थे, साज़िशी लोग थे, इसलिए लड़ाई के बजाए कीना और दुश्मनी का प्रदर्शन करते थे और मुसलमानों से वायदों और समझौतों के बावजूद पीड़ा पहुंचाने के लिए तरह-तरह के हीले और चालें चला करते थे। अलबत्ता बनू क़ैनुक़ाअ का देश निकाला और काब बिन अशरफ़ की हत्या की घटना घटी तो उनका मनोबल टूट गया और उन्होंने डरकर चुप्पी साध ली, लेकिन उहुद की लड़ाई के बाद उनकी हिम्मत फिर पलट आई। उन्होंने खुल्लम खुल्ला दुश्मनी की और वचन-भंग किया। मदीना के मुनाफ़िक़ों और मक्का के मुश्रिकों से परदे के पीछे सांठ-गांठ की गई और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों के समर्थन में काम किया।[2]

नबी सल्ल० ने सब कुछ जानते हुए सब्र से काम लिया, लेकिन रजीअ और मऊना की दुर्घटनाओं के बाद उनकी जुर्रात बहुत ज़्यादा बढ़ गई और उन्होंने नबी सल्ल० ही के ख़ात्मे का प्रोग्राम बना लिया।

इसका विवरण यह है कि नबी सल्ल० अपने कुछ साथियों के साथ यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए और उनसे बनू किलाब के इन दोनों मारे गए लोगों की दियत

अलैहि व सल्लम जितने बेरे मऊना वालों पर दुखी हुए, मैंने किसी और पर आपको इतना दुखी होते नहीं देखा। (2/54)

1. सहीह बुख़ारी 2/586, 587, 588
2. सुनन अबू दाऊद, बाब ख़बरुन्नज़ीर की रिवायत से यह बात ली गई है, देखिए सुनने अबू दाऊद मय शरह औनुल माबूद 2/116, 117

में मदद के लिए बातचीत की। (जिन्हें हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी ने ग़लती से क़त्ल कर दिया था) उन पर समझौते के अनुसार यह मदद ज़रूरी थी।

उन्होंने कहा, अबुल क़ासिम! हम ऐसा ही करेंगे। आप यहां तशरीफ़ रखिए। हम आपकी ज़रूरत पूरी किए देते हैं। आप उनके एक घर की दीवार से टेक लगाकर बैठ गए और उनके वायदे के पूरा करने का इन्तिज़ार करने लगे। आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और सहाबा किराम रज़ि० की एक जमाअत भी थी।

इधर यहूदी तंहाई में जमा हुए तो उन पर शैतान सवार हो गया और जो दुर्भाग्य उनका लिखा बन चुका था, उसे शैतान ने सुन्दर बनाकर पेश किया यानी इन यहूदियों ने आपस में मश्विरा किया कि क्यों न नबी सल्ल० ही को क़त्ल कर दिया जाए।

चुनांचे उन्होंने कहा, कौन है जो इस चक्की को लेकर ऊपर जाए और आपके सर पर गिराकर आपको कुचल दे?

इस पर एक भाग्यहीन यहूदी अम्र बिन जह्श ने कहा, 'मैं'।

इन लोगों से सलाम बिन मुश्कम ने कहा भी कि ऐसा न करो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम! इन्हें तुम्हारे इरादों की ख़बर दे दी जाएगी और फिर हमारे और उनके बीच जो वायदा-समझौता है, यह उसके ख़िलाफ़ भी है, लेकिन उन्होंने एक न सुनी और अपने मंसूबे को अमली जामा पहनाने पर उतर आए।

इधर अल्लाह की ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और आपको यहूदियों के इरादे से ख़बरदार किया। आप तेज़ी से उठे और मदीने के लिए चल पड़े। बाद में सहाबा किराम भी आपसे आ मिले और कहने लगे आप उठ आए और हम समझ न सके।

आपने बताया कि यहूदियों का इरादा क्या था।

मदीना वापस आकर आपने तुरन्त ही मुहम्मद बिन मस्लमा को बनी नज़ीर के पास रवाना फ़रमाया और उन्हें यह नोटिस दिया कि तुम लोग मदीने से निकल जाओ। अब यहां मेरे साथ नहीं रह सकते, तुम्हें दस दिन की मोहलत दी जाती है। इसके बाद जो व्यक्ति पाया जाएगा, उसकी गरदन मार दी जाएगी। इस नोटिस के बाद यहूदियों के देश-निकाला के सिवा कोई रास्ता समझ में न आया।

चुनांचे वे कुछ दिन तक सफ़र की तैयारी करते रहे। लेकिन इसी बीच अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने कहला भेजा कि अपनी जगह बरक़रार रहो, डट जाओ और घर-बार न छोड़ो। मेरे पास दो हज़ार लड़ने वाले

मर्द हैं, जो तुम्हारे साथ क़िले में दाख़िल होकर तुम्हारी हिफ़ाज़त में जान दे देंगे और अगर तुम्हें निकाला ही गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में हरगिज़ किसी से नहीं दबेंगे और अगर तुमसे लड़ाई की गई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और बनू कुरैज़ा और बनू ग़तफ़ान जो तुम्हारे मित्र हैं, वे भी तुम्हारी मदद करेंगे।

यह पैग़ाम सुनकर यहूदियों का आत्मविश्वास पलट आया और उन्होंने तै कर लिया कि देश निकाला लेने के बजाए टक्कर ली जाएगी। उनके सरदार हुइ बिन अख़तब को उम्मीद थी कि मुनाफ़िक़ों के सरदार ने जो कुछ कहा है वह पूरा करेगा, इसलिए उसने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास जवाबी सन्देश भेज दिया कि हम अपने घरों से नहीं निकलते। आपको जो करना हो कर लें।

इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमानों की दृष्टि से यह स्थिति नाज़ुक थी, क्योंकि उनके लिए अपने इतिहास के इस नाज़ुक और पेचीदा मोड़ पर दुश्मनों से टकराव कुछ ज़्यादा सन्तोषजनक न था। अंजाम ख़तरनाक हो सकता था। सारा अरब मुसलमानों के ख़िलाफ़ था और मुसलमानों के दो प्रचार दल बड़ी बेदर्दी से मारे जा चुके थे।

फिर बनू नज़ीर के यहूदी इतने ताक़तवर थे कि उनका हथियार डालना आसान न था और उनसे लड़ाई मोल लेने में तरह-तरह की आशंकाएं थीं। पर बेरे मऊना की दुखद घटना से पहले और उसके बाद के हालात ने जो नई करवट ली थी, उसकी वजह से मुसलमान क़त्ल और वचन-भंग करने जैसे अपराधों के सिलसिले में ज़्यादा भावुक हो गए थे और इन अपराध के करने वालों के ख़िलाफ़ मुसलमानों की प्रतिशोध-भावना बढ़ गई थी, इसलिए उन्होंने तै कर लिया कि चूंकि बनू नज़ीर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या का प्रोग्राम बनाया था, इसलिए उनसे बहरहाल लड़ना है भले ही इसके कुछ भी नतीजे निकलें।

चुनांचे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुइ बिन अख़तब का जवाबी पैग़ाम मिला तो आपने और सहाबा किराम रज़ि० ने कहा, अल्लाहु अक्बर और फिर लड़ाई के लिए उठ खड़े हुए और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को मदीने का इन्तिज़ाम सौंप कर बनू नज़ीर के इलाक़े की ओर रवाना हो गए। हज़रत अली रज़ि० के हाथ में झंडा था। बनू नज़ीर के इलाक़े में पहुंचकर उन्हें घेर लिया गया।

इधर बनू नज़ीर ने अपने क़िलों और गढ़ियों में पनाह ली और क़िला बन्द रहकर फ़सील से तीर और पत्थर बरसाते रहे, चूंकि खजूर के बाग़ उनके लिए

ढाल का काम दे रहे थे, इसलिए आपने हुक्म दिया कि इन पेड़ों को काट कर जला दिया जाए। बाद में इसी की तरफ़ इशारा करके हज़रत हस्सान रज़ि० ने फ़रमाया था—

'बनी लुवी के सरदारों के लिए यह मामूली बात थी कि बुवैरा में आग के शोले भड़कें' (बुवैरा बनू नज़ीर के मरुद्यान का नाम था) और उसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद भी आया—

'तुमने जो खजूर के पेड़ काटे या जिन्हें अपने तनों पर खड़ा रहने दिया वह सब अल्लाह ही के हुक्म से था और ऐसा इसलिए किया गया ताकि इन नाफ़रमानों को रुसवा करे।' (59/5)

बहरहाल जब उनका घेराव कर लिया गया, तो बनू क़ुरैज़ा उनसे अलग-थलग रहे। अब्दुल्लाह बिन उबई ने भी धोखा दिया और उनके मित्र ग़तफ़ान भी मदद को न आए। ग़रज़ कोई भी इन्हें मदद देने या इनकी मुसीबत टालने पर तैयार न हुआ, इसीलिए अल्लाह ने उनकी घटना की मिसाल यों बयान फ़रमाई—

'जैसे शैतान उनसे कहता है, कुफ़्र करो और जब वह कुफ़्र कर बैठता है, तो शैतान कहता है, मैं तुमसे बरी हूं।' (59/61)

घेराव कुछ ज़्यादा लम्बा नहीं हुआ, बल्कि सिर्फ़ छः रात, या कुछ लोगों के कहने के अनुसार पन्द्रह रात चला कि इस बीच अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उनका मनोबल टूट गया, वे हथियार डालने पर तैयार हो गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहलवा भेजा कि हम मदीने से निकलने को तैयार हैं। आपने उनके देश निकाला के प्रस्ताव को मान लिया और यह भी मान लिया कि वे हथियार के अलावा बाक़ी जितना साज़ व सामान ऊंटों पर लाद सकते हों, सब लेकर बाल-बच्चों समेत चले जाएं।

बनू क़ुरैज़ा ने इस मंज़ूरी के बाद हथियार डाल दिए और अपने हाथों अपने मकान उजाड़ डाले, ताकि दरवाज़े और खिड़कियां भी लाद ले जाएं, बल्कि कुछ ने तो छत की कड़ियां और दीवारों की खूंटियां भी लाद लीं, फिर औरतों और बच्चों को सवार किया और छः सौ ऊंटों पर लद-लदा कर रवाना हो गए।

ज़्यादातर यहूदियों और उनके सरदारों ने जैसे, हुइ बिन अख़्तब और सलाम बिन अबी हुक़ैक़ ने ख़ैबर का रुख किया। एक जमाअत शामदेश रवाना हुई, सिर्फ़ दो आदमियों यानी यामीन बिन अम्र और अबू सईद बिन वह्ब ने इस्लाम क़ुबूल किया। इसलिए उनके माल को हाथ नहीं लगाया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शर्त के मुताबिक़ बनू

नज़ीर के हथियार, ज़मीन, घर और बाग़ अपने क़ब्ज़े में ले लिए। हथियार में पचास ज़िरहें (कवच), पचास ख़ूद और तीन सौ चालीस तलवारें थीं।

बनू नज़ीर के ये बाग़, ज़मीन और मकान, खालिस अल्लाह के रसूल सल्ल० का हक़ था। आपको अधिकार था कि आप इसे अपने लिए बचा के रखें या जिसे चाहें दे दें। चुनांचे आपने (ग़नीमत के माल की तरह) इन मालों का पांचवां हिस्सा नहीं निकाला, क्योंकि अल्लाह ने इसे आपको फ़ै के तौर पर दिया था। मुसलमानों ने इस पर घोड़े और ऊंट दौड़ा कर इसे (तलवार के बल पर) नहीं हासिल किया था। इसलिए आपने अपने इस विशेषाधिकार के तहत इस पूरे माल को सिर्फ़ शुरू के मुहाजिरों में बांट दिया, अलबत्ता दो अंसारी सहाबा यानी अबू दुजाना और सह्ल बिन हुनैफ़ रज़ि० को उनकी तंगदस्ती की वजह से उसमें से कुछ दे दिया।

इसके अलावा आपने अपने लिए (एक छोटा सा टुकड़ा बचा लिया, जिसमें से आप) अपनी बीवियों का साल भर का ख़र्च निकालते थे और इसके बाद जो कुछ बचता था, उसे जिहाद की तैयारी के लिए हथियार और घोड़ों के जुटाने में लगा दिया करते थे।

ग़ज़वा बनी नज़ीर रबीउल अव्वल 04 हि०, तद० अगस्त सन् 625 ई० में पेश आया और अल्लाह ने इस ताल्लुक़ से पूरी सूरः हश्र उतारी, जिसमें यहूदियों को देश निकाला दिए जाने का चित्र खींचते हुए मुनाफ़िक़ों की रीति-नीति पर से परदा उठा दिया गया है और फ़ै माल के हुक्मों का बयान फ़रमाते हुए मुहाजिर और अंसार की सराहना की गई है और यह भी बताया गया है कि लड़ाई की मस्लहतों को देखते हुए दुश्मन के पेड़ काटे जा सकते हैं और उनमें आग लगाई जा सकती है। ऐसा करना 'धरती में बिगाड़ पैदा करना' नहीं है।

फिर ईमान वालों को तक़्वा अपनाने और आख़िरत की तैयारी की ताकीद की गई है।

इन सब के बाद अल्लाह ने अपना गुणगान करते हुए अपने गुणों का बखान करते हुए सूरः ख़त्म फ़रमा दी है।

इब्ने अब्बास रज़ि० इस सूरः (हश्र) के बारे में फ़रमाया करते थे कि इसे सूरः बनी नज़ीर कहो।[1]

यह उस लड़ाई के बारे में इब्ने इस्हाक़ और सीरत पर लिखने वाले आम विद्वानों के बयान का सार है। इमाम अबू दाऊद और अब्दुर्रज़्ज़ाक आदि ने इस

1. इब्ने हिशाम 2/190, 191, 192, ज़ादुल मआद 2/71, 110, सहीह बुख़ारी 2/574, 575

लड़ाई की एक दूसरी वजह रिवायत की है और वह यह है कि जब बद्र की लड़ाई पेश आई तो उस बद्र की लड़ाई के बाद क़ुरैश ने यहूदियों को लिखा कि तुम लोगों के पास कवच और क़िले हैं, इसलिए तुम लोग हमारे साहब (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से लड़ाई करो वरना हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे और हमारे और तुम्हारे पाज़ेब के दर्मियान कोई चीज़ रुकावट न बन सकेगी। जब यहूदियों को यह ख़त मिला तो बनू नज़ीर ने ग़दर का फ़ैसला कर लिया, चुनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहला भेजा कि आप अपने साथियों में से तीस आदमी को साथ लेकर हमारी ओर तशरीफ़ लाएं और हमारी ओर से भी तीस आमिल निकलें, फ़्लां जगह जो हमारे और आपके बीच है, मुलाक़ात हो और वे आपकी बात सुनें। इसके बाद अगर वह आपको सच्चा मान लें और आप पर ईमान ले आएं तो हम सब आप पर ईमान ले आएंगे।

इस प्रस्ताव के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस सहाबा रज़ि० के साथ तशरीफ़ ले गए और यहूदियों के भी तीस आलिम आए। एक खुली जगह पहुंचकर कुछ यहूदियों ने कुछ से कहा, देखो, इनके साथ तीस आदमी होंगे, जिनमें से हर एक इनसे पहले मरना पसन्द करेगा। ऐसी स्थिति में तुम उन तक कैसे पहुंच सकते हो? इसके बाद उन्होंने कहला भेजा कि हम साठ आदमी होंगे, तो आप कैसे समझाएंगे और हम कैसे समझेंगे? बेहतर है कि आप अपने तीन साथियों के साथ आएं और हमारे भी तीन आलिम के पास जाएं। और वे आपकी बात सुनें। अगर वे ईमान लाएंगे तो हम सब ईमान लाएंगे और आपकी पुष्टि करेंगे। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तीन सहाबा के साथ तशरीफ़ ले गए। उधर यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल के इरादे से ख़ंजर छिपाकर लाए, लेकिन बनू नज़ीर की एक हितैषी औरत ने अपने भतीजे के पास, जो एक अंसारी मुसलमान था—अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बनू नज़ीर के ग़द्र के इरादे की ख़बर भेजी। वह तेज़ रफ़्तारी से आया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन तक पहुंचने से पहले ही पा लिया और कानों में उनकी ख़बर सुनाई। आप वहीं से वापस आ गए और दूसरे दिन सहाबा किराम के दस्ते लेकर तशरीफ़ ले गए और उनका घेराव कर लिया और फ़रमाया कि तुम लोग जब तक मुझे अह्द व पैमान न दे दो, भरोसे योग्य नहीं। उन्होंने किसी भी प्रकार का अह्द देने से इन्कार कर दिया। इस पर आपने और मुसलमानों ने उस दिन उनसे लड़ाई की। दूसरे दिन घोड़े और दस्ते लेकर आप बनू क़ुरैज़ा के पास तशरीफ़ ले गए और बनू नज़ीर को उनके हाल पर छोड़ दिया। बनू क़ुरैज़ा को अह्द व पैमान करने की दावत दी। उन्होंने समझौता कर लिया, इसलिए आप उनसे पलट

आए और दूसरे दिन दस्तों के साथ फिर बनू नज़ीर का रुख़ किया और उनसे लड़ाई लड़ी। आख़िर में उन्होंने इस शर्त पर देश निकाला मंज़ूर कर लिया कि हथियारों के सिवा जो कुछ ऊंटों पर लादा जा सकता है, उसे हम ले जा सकेंगे। चुनांचे बनू नज़ीर आए और अपने साज़ व सामान, घरों के दरवाज़े और लकड़ियां, ग़रज़ यह कि जो कुछ भी ऊंटों से उठ सकता था, उसे लाद लिया, इसके लिए उन्होंने ख़ुद अपने हाथों अपने घर बर्बाद किए और उन्हें ढाया और जो लकड़ियां काम की हुईं, उन्हें लाद लिया। यह देश निकाला शाम देश की तरफ़ उन लोगों का पहला जमाव या पहला हांका और जमाव था।[1]

6. ग़ज़वा नज्द

ग़ज़वा बनी नज़ीर में किसी क़ुरबानी के बग़ैर मुसलमानों को शानदार कामियाबी हासिल हुई। इससे मदीने में मुसलमानों की सत्ता मज़बूत हो गई और मुनाफ़िक़ों पर निराशा छा गई। अब उन्हें कुछ खुलकर करने की जुर्रात नहीं हो रही थी।

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन बद्दुओं की ख़बर लेने के लिए यकसू हो गए, जिन्होंने उहुद के बाद ही से मुसलमानों को बड़ी कठिनाइयों में उलझा रखा था और बड़े ज़ालिमाना तरीक़े से अल्लाह की दावत देने वालों पर हमले कर करके उन्हें मौत के घाट उतार चुके थे और अब उनकी जुर्रात इस हद तक बढ़ चुकी थी कि वे मदीने पर चढ़ाई की सोच रहे थे।

चुनांचे ग़ज़वा बनी नज़ीर से छूटने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी इन झूठों को सिखाने के लिए उठे भी न थे कि आपको सूचना मिली कि बनू ग़तफ़ान के दो क़बीले बनू मुहारिब और बनू सालबा लड़ाई के लिए बद्दुओं और अरब के देहातियों के लोगों को जमा कर रहे हैं।

इस ख़बर के मिलते ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द पर धावा बोलने का फ़ैसला किया और नज्द के रेगिस्तानों में दूर तक घुसते चले गए, जिसका मक़सद यह था कि इन संगदिल बद्दुओं पर भय छा जाए और दोबारा मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहले जैसी संगीन कार्रवाइयों को दोहराने की जुर्रात न करें।

इधर उद्दंड बद्दू, जो लूटमार की तैयारियां कर रहे थे, मुसलमानों के इस यकायकी धावे की ख़बर सुनते ही डरकर भाग खड़े हुए और पहाड़ो की चोटियों

1. लेखक अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 8/358-360, हदीस 9733, सुनन अबी दाऊद किताबुल ख़िराज वल फ़ै वल आरा बाब फ़ी ख़बरुन नज़ीर 2/154

में जा दुबके।

मुसलमानों ने लुटेरे क़बीलों पर अपना रौब व दबदबा क़ायम करने के बाद अम्न व अमान के साथ वापस मदीने की राह ली।

सीरत लिखने वालों ने इस सिलसिले में एक निश्चित ग़ज़वे का नाम लिया है, जो रबीउल आख़िर या जुमादल ऊला सन् 04 हि० में नज्द भू-भाग पर पेश आरया था और वे इसी ग़ज़वा को ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ क़रार देते हैं।

जहां तक तथ्यों और प्रमाणों का ताल्लुक़ है, तो इसमें सन्देह नहीं कि इन दिनों में नज्द के अन्दर एक ग़ज़वा पेश आया था, क्योंकि मदीना के हालात ही कुछ ऐसे थे। अबू सुफ़ियान ने उहुद की लड़ाई से वापसी के वक़्त अगले साल बद्र के मैदान में लड़ाई के लिए ललकारा था और जिसे मुसलमानों ने मंज़ूर कर लिया था। अब उसका वक़्त क़रीब आ रहा था और सामरिक दृष्टि से यह बात किसी तरह मुनासिब न थी कि बद्दुओं और अरब देहातियों को उनकी सरकशी और उद्दंडता पर क़ायम छोड़कर बद्र जैसी ज़ोरदार लड़ाई में जाने के लिए मदीना ख़ाली कर दिया जाए, बल्कि ज़रूरी था कि बद्र के मैदान में जिस भयानक लड़ाई की उम्मीद थी, उसके लिए निकलने से पहले, इन बद्दुओं की उछल-कूद पर ऐसी चोट लगाई जाए कि उन्हें मदीना का रुख़ करने की जुर्रात न हो।

बाक़ी रही यह बात कि यही ग़ज़वा जो रबीउल आख़र या जुमादल ऊला सन् 04 हि० में पेश आया था, ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ था, हमारी खोज के मुताबिक़ सही नहीं, क्योंकि ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० मौजूद थे और अबू हुरैरह रज़ि० ख़ैबर की लड़ाई से कुछ दिन पहले इस्लाम लाए थे।

इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० मुसलमान होकर यमन से रवाना हुए तो उनकी सवारी साहिल हब्शा से जा लगी थी और वह हब्शा से उस वक़्त वापस आए थे जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इस तरह वह पहली बार ख़ैबर ही के अन्दर नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो सके थे। पस ज़रूरी है कि ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ ग़ज़वा ख़ैबर के बाद पेश आया हो।

सन् 04 हि० के एक अर्से के बाद ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ के पेश आने की एक निशानी यह भी है कि नबी सल्ल० ने ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में ख़ौफ़ की नमाज़[1]

---

1. लड़ाई की हालत में पढ़ी गई नमाज़ को 'ख़ौफ़ की नमाज़' कहते हैं, जिसका एक तरीक़ा यह है कि आधी फ़ौज हथियार बन्द होकर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े, बाक़ी आधी फ़ौज हथियार बांधे दुश्मन पर नज़र रखे। एक रक्अत के बाद यह फ़ौज इमाम

पढ़ी थी और ख़ौफ़ की नमाज़ पहले पहल ग़ज़वा अस्फ़ान में पढ़ी गई और इसमें कोई मतभेद नहीं कि ग़ज़वा अस्फ़ान का ज़माना ग़ज़वा ख़ंदक़ के भी बाद का है, जबकि ग़ज़वा ख़ंदक़ का ज़माना सन् 05 हि० के आख़िर का है।

सच तो यह है कि ग़ज़वा अस्फ़ान हुदैबिया के सफ़र की एक छोटी-सी घटना है और हुदैबिया का सफ़र सन् 06 हि० के आख़िर में हुआ था, जिससे वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर का रास्ता लिया था, इसलिए इस दृष्टि से भी ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ का ज़माना ख़ैबर के ज़माने के बाद का ही साबित होता है।

7. ग़ज़वा बद्र द्वितीय

अरब देहातियों के दबदबे को कम करने और बद्दुओं की शरारत से सन्तुष्ट हो जाने के बाद मुसलमानों ने अपने बड़े दुश्मन (क़ुरैश) से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी, क्योंकि साल तेज़ी से ख़त्म हो रहा था और उहुद के मौक़े पर तै किया हुआ वक़्त क़रीब आता जा रहा था, और मुहम्मद सल्ल० और सहाबा किराम का फ़र्ज़ था कि लड़ाई के मैदान में अबू सुफ़ियान और उसकी क़ौम से दो-दो हाथ करने के लिए निकलें और लड़ाई की चक्की इस हिम्मत के साथ चलाएं कि जो फ़रीक़ ज़्यादा हिदायत पाने और मज़बूत रहने का हक़दार हो, हालात का रुख़ पूरी तरह उसके हक़ में हो जाए।

चुनांचे शाबान 04 हि०, (तद० जनवरी 626 ई०) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का इंतिज़ाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंप कर उस तैशुदा लड़ाई के लिए बद्र का रुख़ फ़रमाया। आपके साथ डेढ़ हज़ार की फ़ौज और दस घोड़े थे। आपने फ़ौज का झंडा हज़रत अली रज़ि० को दिया और बद्र पहुंच कर मुश्रिकों के इन्तिज़ार में पड़ाव डाल लिया।

दूसरी ओर अबू सुफ़ियान भी पचास सवार समेत दो हज़ार मुश्रिकों की फ़ौज लेकर रवाना हुआ और मक्का से एक मरहला दूर मर्रज़्ज़हरान घाटी पहुंच कर मजन्ना नाम के सोते पर पड़ाव डाला, लेकिन वह मक्का ही से बोझल और बद-दिल था। बार-बार मुसलमानों के साथ होने वाली लड़ाई का अंजाम सोचता

के पीछे आ जाए और पहली फ़ौज दुश्मन पर नज़र रखने चली जाए। इमाम दूसरी रक्अत पूरी कर ले, तो बारी-बारी फ़ौज के दोनों हिस्से अपनी-अपनी नमाज़ें पूरी करें। इस नमाज़ के इससे मिलते-जुलते और भी कई तरीक़े हैं जो लड़ाई के मौक़ों को देखते हुए अपनाए जाते हैं, सविस्तार जानने के लिए हदीस की किताबें पढ़िए।

था और आतंक और दबदबे से कांप उठता था। मर्रज़्ज़हरान पहुंच कर उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह वापसी के बहाने सोचने लगा। आख़िरकार अपने साथियों से कहा, क़ुरैश के लोगो ! लड़ाई उस वक़्त सही होती है, जब ख़ुशहाली और हरियाली हो कि जानवर भी चर सकें और तुम भी दूध पी सको। इस समय सूखा चल रहा है, इसलिए मैं वापस जा रहा हूं, तुम भी वापस चले चलो।

ऐसा मालूम होता है कि सारी फ़ौज पर भय और आतंक छाया हुआ था, क्योंकि अबू सुफ़ियान के इस मश्विरे पर किसी प्रकार के विरोध के बिना ही सब ने वापसी का रास्ता लिया और किसी ने भी सफ़र जारी रखने और मुसलमानों से लड़ाई लड़ने की राय न दी।

उधर मुसलमानों ने बद्र में आठ दिन तक ठहर कर दुश्मन का इंतिज़ार किया और इस बीच अपने व्यापार का सामान बेचकर एक दिरहम के सौ दिरहम बनाते रहे। इसके बाद इस शान से मदीना वापस आए कि लड़ाई में आगे बढ़ने की बागडोर उनके हाथ में आ चुकी थी। दिलों पर उनकी धाक बैठ चुकी थी और वातावरण भर उनकी पकड़ मज़बूत हो चुकी थी। यह ग़ज़वा बद्र, मौअिद, बद्र द्वितीय, बद्र आख़िर और छोटी बद्र के नामों से जाना जाता है।[1]

ग़ज़वा दूमतुल जन्दल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र से वापस हुए तो हर ओर सुख-शान्ति थी और पूरे इस्लामी राज्य में ठंडी हवा चल रही थी। अब आप अरब की अन्तिम सीमाओं तक तवज्जोह फ़रमाने के लिए फ़ारिग़ हो चुके थे और इसकी ज़रूरत भी थी, ताकि हालात पर मुसलमानों का ग़लबा और कन्ट्रोल रहे और दोस्त व दुश्मन सभी उसको महसूस करें और मानें।

चुनांचे छोटी बद्र के बाद छः महीने तक आप इत्मीनान से मदीने में ठहरे रहे। इसके बाद आपको सूचनाएं मिलीं कि शाम के क़रीब दूमतुल जन्दल के पास आबाद क़बीले आने-जाने वाले क़ाफ़िलों पर डाके डाल रहे हैं और वहां से गुज़रने वाली चीज़ें लूट लेते हैं। यह भी मालूम हुआ कि उन्होंने मदीने पर हमला करने के लिए एक बड़ा जत्था जुटा लिया है। इन सूचनाओं को देखते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबाअ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीने में अपना जानशीं बनाकर एक हज़ार मुसलमानों की फ़ौज के

---

1. इस लड़ाई को सविस्तार जानने के लिए देखिए इब्ने हिशाम, 2/209, 210, ज़ादुल मआद 2/112

साथ कूच फ़रमाया। यह 25 रबीउल अव्वल सन् 05 हि० की घटना है। रास्ता बताने के लिए बनू अज़रा का एक आदमी रख लिया गया, जिसका नाम मज़्कूर था।

इस ग़ज़्वे में आपका तरीक़ा था कि आप रात में सफ़र फ़रमाते और दिन में छिपे रहते थे, ताकि दुश्मन पर बिल्कुल अचानक और बेख़बरी में टूट पड़ें। क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि वे लोग बाहर निकल गए हैं, इसलिए उनके मवेशियों और चरवाहों पर हल्ला बोल दिया। कुछ हाथ आए, कुछ निकल भागे।

जहां तक दूमतुल जन्दल के निवासियों का ताल्लुक़ है, तो जिसका जिधर सींग समाया, भाग निकला। जब मुसलमान दूमा के मैदान में उतरे, तो कोई न मिला। आपने कुछ दिन ठहर कर इधर-उधर कई दस्ते रवाना किए, लेकिन कोई भी हाथ न आया। आख़िरकार आप मदीना पलट आए।

इस ग़ज़्वे में उऐना बिन हिस्न से समझौता भी हुआ। दूमा शामदेश की सीमा पर स्थित एक शहर है। यहां से दमिश्क़ का रास्ता पांच रात का और मदीने का पन्द्रह रात का है।

इन अचानक और निर्णायक क़दमों और सूझ-बूझ और विवेक पर आधारित योजनाओं द्वारा नबी सल्ल० ने इस्लामी राज्य में अम्न व अमान बहाल करने और स्थिति पर क़ाबू पाने में सफलता पाई और समय की चाल का रुख़ मुसलमानों की ओर मोड़ दिया और उन बराबर पाई जाने वाली अन्दरूनी और बाहरी कठिनाइयों की तेज़ी कम की जो हर ओर से उन्हें घेरे हुए थीं, चुनांचे मुनाफ़िक़ चुप और निराश होकर बैठ गए। यहूदियों का एक क़बीला देश-निकाला दे दिया गया। दूसरे क़बीलों ने पड़ोसी होने का हक़ अदा करने का वचन दिया। बद्दू और क़ुरैश ढीले पड़ गए और मुसलमानों को इस्लाम फैलाने और रब्बुल आलमीन के पैग़ाम (सन्देश) का प्रचार करने के मौक़े मिल गए।

ग़ज़वा अहज़ाब

एक साल से ज़्यादा अर्से की लगातार फ़ौजी महिमों और कार्रवाइयों के बाद अरब प्रायद्वीप पर शान्ति छा गई थी और हर ओर सुख-शान्ति का दौर-दौरा था, पर यहूदियों को, जो अपनी दुष्टाओं, षड्यंत्रों और विद्वेष भावनाओं के नतीजे में तरह-तरह के अपमान और रुसवाई का मज़ा चख चुके थे, अब भी होश नहीं आया था। उन्होंने धोखादेही, चालें और षड्यंत्र के अप्रिय परिणामों से कोई सबक़ नहीं सीखा था, चुनांचे ख़ैबर चले जाने के बाद पहले तो उन्होंने यह इन्तिज़ार किया कि देखें मुसलमानों और बुतपरस्तों में जो सैनिक संघर्ष चल रहा है, उसका नतीजा क्या होता है, लेकिन जब देखा कि मुसलमानों के लिए हालात उनके पक्ष में जा रहे हैं, वे फैल रहे हैं, बढ़ रहे हैं और उनका प्रभाव दूर-दूर तक फैल गया है, तो उन्हें जलन हुई।

उन्होंने नए सिरे से साज़िश की और मुसलमानों पर एक करारी चोट लगाने की तैयारी में लग गए, ताकि मुसलमान हमेशा के लिए ख़त्म कर दिए जाएं, लेकिन उन्हें मुसलमानों से सीधे-सीधे टकराने का साहस नहीं था, इसलिए इस मक़्सद के लिए एक बड़ी ही भयानक योजना बनाई।

इसका विवरण यह है कि बनू नज़ीर के बीस सरदार और नेता मक्का में क़ुरैश के पास हाज़िर हुए और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई पर उभारते हुए अपनी मदद का यक़ीन दिलाया। क़ुरैश ने उनकी बात मान ली। चूंकि वे उहुद के दिन बद्र के मैदान में मुसलमानों के ख़िलाफ़ मैदान में आने का एलान और वायदा करके उसके विरुद्ध काम कर चुके थे, इसलिए उनका विचार था कि अब इस प्रस्तावित लड़ाई द्वारा वे अपनी ख्याति भी वापस ले आएंगे और अपनी कही हुई बात भी पूरी कर देंगे।

इसके बाद यहूदियों की यह टोली बनू ग़तफ़ान के पास गई और क़ुरैश ही की तरह उन्हें भी लड़ाई पर तैयार किया। वे भी तैयार हो गए। फिर इस मंडली ने अरब के बाक़ी क़बीलों में घूम-घूम कर लोगों को लड़ाई पर उभारा और इन क़बीलों के भी बहुत से लोग तैयार हो गए।

ग़रज़ इस तरह यहूदी सियासतकारों (कूटनीतिज्ञों) ने पूरी कामियाबी के साथ कुफ़्र के ताम बड़े-बड़े जत्थों और गिरोहों को नबी सल्ल० और आपकी दावत और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़का कर लड़ाई के लिए तैयार कर लिया।

इसके बाद तैशुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ दक्षिण से क़ुरैश, किनाना और तिहामा

में आबाद दूसरे मित्र क़बीलों ने मदीने की ओर कूच किया। इन सबका प्रधान सेनापति अबू सुफ़ियान था और उनकी तायदाद चार हज़ार थी। यह फ़ौज मर्रज़्ज़हरान पहुंची तो बनू सुलैम भी उसमें आ शामिल हुए।

उधर उसी वक़्त पूरब की ओर से ग़तफ़ानी क़बीले फ़ज़ारा, मुर्रा और अशजअ ने कूच किया। फ़ज़ारा का सेनापति उऐना बिन हिस्न था, बनू मुर्रा का हारिस बिन औफ़ और बनू अशजअ का मिसअर बिन रख़ीला। इनके अलावा बनू असद और दूसरे क़बीलों के बहुत से लोग भी आए थे।

इन सारे क़बीलों ने एक निश्चित समय और निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक़ मदीने का रुख़ किया था, इसलिए कुछ दिन के अन्दर-अन्दर मदीने के पास दस हज़ार फ़ौजियों की एक सेना जमा हो गयी। यह इतनी बड़ी सेना थी कि शायद मदीना की पूरी आबादी (औरतों, बच्चों, बूढ़ों और जवानों को मिलाकर भी) इसके बराबर न थी।

अगर हमलावरों का यह ठाठें मारता समुद्र मदीना की चारदीवारी तक अचानक पहुंच जाता, तो मुसलमानों के लिए सख़्त ख़तरनाक साबित होता। कुछ असंभव नहीं, उनकी जड़ कट जाती और उनका पूरा सफ़ाया हो जाता, लेकिन मदीने का नेतृत्व बड़ा चौकस और मुस्तैद नेतृत्व था। उसकी उंगलियां हमेशा हालात की नब्ज़ पर रहती थीं, और वह परिस्थिति का विश्लेषण करके आने वाली घटनाओं का ठीक-ठीक अन्दाज़ा भी लगाता था और उनसे निमटने के लिए सर्वथा उचित क़दम भी उठाता था, चुनांचे कुफ़्फ़ार की भारी फ़ौज ज्यों ही अपनी जगह से हरकत में आई, मदीने के मुख़्बिरों ने अपने नेतृत्व को इसकी सूचना दे दी।

सूचना मिलते ही रसूलुल्लाह सल्ल० ने हाई कमान की मज्लिसे शूरा बुला ली और प्रतिरक्षात्मक योजनाओं पर सलाह-मश्विरा किया।

मज्लिसे शूरा ने सोच-विचार के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० का एक प्रस्ताव पूर्ण सहमति से मंजूर कर लिया। यह प्रस्ताव हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने इन शब्दों में पेश किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़ारस में जब हमारा घेराव किया जाता था, तो हम अपने चारों ओर खाई खोद लेते थे।

यह बड़ी हिक्मत भरी प्रतिरक्षात्मक चाल थी। अरब के लोग इसे जानते न थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रस्ताव को तुरन्त अमली जामा पहनाते हुए हर दस आदमी को चालीस हाथ खाई खोदने का काम सौंप दिया और मुसलमानों ने पूरा दिल लगाकर भरपूर मेहनत के साथ खाई ख़ोदनी शुरू कर दी।

प्यारे नबी सल्ल० इस काम पर उभारते भी थे और अमली तौर पर इस काम में पूरी तरह शरीक भी रहते थे। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खाई में थे, लोग खोद रहे थे और हम कंधों पर मिट्टी ढो रहे थे कि (इस बीच) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह ! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस मुहाजिरों और अंसार को बख़्श दे।'[1]

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ (खाई) की ओर तशरीफ़ लाए तो देखा कि मुहाजिरीन व अंसार एक ठंडी सुबह में खोदने का काम कर रहे थे, उनके पास ग़ुलाम न थे कि उनके बजाए ये काम ग़ुलाम कर देते। आपने उनकी मेहनत और भूख देखकर फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह ! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस मुहाजिरों और अंसार को बख़्श दे।'

अंसार और मुहाजिरों ने उसके जवाब में कहा—

'हम वह है कि हमने हमेशा के लिए, जब तक कि बाक़ी रहें, मुहम्मद सल्ल० से जिहाद पर बैअत की है।'[2]

सहीह बुख़ारी ही में एक रिवायत हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० की भी मिलती है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप ख़ंदक़ से मिट्टी ढो रहे थे, यहां तक कि धूल ने आपके पेट की खाल ढांक दी थी। आपके बाल बहुत ज़्यादा थे। मैंने (इसी हालत में) आपको अब्दुल्लाह बिन रवाहा के जोशीले पदों को पढ़ते सुना। आप मिट्टी ढोते जाते थे और यह कहते जाते थे—

'ऐ अल्लाह ! अगर तू न होता तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा देते, न नमाज़ पढ़ते, पस हम पर सन्तोष उतार और अगर टकराव हो जाए, तो हमारे क़दम जमाए रख। उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया है। अगर उन्होंने कोई फ़ित्ना चाहा, तो हम हरगिज़ सर न झुकाएंगे।'

हज़रत बरा फ़रमाते हैं कि अन्तिम शब्द खींच कर कहते थे।

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक़, 2/588
2. सहीह बुख़ारी 1/397, 2/588

एक रिवायत में अन्तिम पद इस तरह है—

'उन्होंने हम पर ज़ुल्म किया है और अगर वे हमें फ़िले में डालना चाहेंगे, तो हम हरगिज़ सर न झुकाएंगे।'[1]

मुसलमान एक ओर इस उत्साह के साथ काम कर रहे थे, तो दूसरी ओर इतने ज़ोर की भूख सहन कर रहे थे कि उसे सोच कर ही कलेजा मुंह को आता है।

चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि (ख़ंदक़ खोदने वालों) के पास दो पसर जौ लाया जाता था और उसे हीक देती हुई चिकनाई के साथ बनाकर लोगों के सामने रख दिया जाता था, लोग भूखे होते थे, इसलिए हलक़ के नीचे उतार लेते हैं हालांकि वह बे-लज़्ज़त होता था। इससे महक फूटती रहती थी।[2]

अबू तलहा कहते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भूख की शिकायत की और अपने पेट खोलकर एक-एक पत्थर दिखाए, तो रसूल सल्ल० ने अपना पेट खोलकर दो पत्थर दिखलाया।[3]

ख़ंदक़ की खुदाई के दौरान नुबूवत की नई निशानियां भी सामने आईं। सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने नबी सल्ल० के अन्दर कड़ी भूख की निशानियां देखीं, तो बकरी का एक बच्चा ज़िब्ह किया और उनकी बीवी ने एक साअ (लगभग ढाई किलो) जौ पीसा, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने राज़दारी के साथ खुफ़िया तौर पर गुज़ारिश की कि अपने कुछ साथियों के साथ तशरीफ़ लाएं, लेकिन नबी सल्ल० तमाम ख़ंदक़ वालों को जिनकी तायदाद एक हज़ार थी, साथ लेकर चल पड़े।

सब लोगों ने उसी थोड़े से खाने को पेट भरकर खाया, फिर भी गोश्त की हांडी अपनी हालत पर बाक़ी रही और भरी की भरी जोश मारती रही और गूंधा हुआ आटा अपनी हालत पर बाक़ी रहा। उससे रोटी पकाई जाती रही।[4]

हज़रत नोमान बिन बशीर की बहन ख़ंदक़ के पास दो पसर खजूर लेकर आईं कि उनके भाई और मामूं खा लेंगे, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० के पास से गुज़रीं तो आपने उनसे वह खजूर मांग ली और एक कपड़े के ऊपर बिखेर दी, फिर ख़ंदक़ वालों को दावत दी। ख़ंदक़ वाले उसे खाते गए और वह बढ़ती गई, यहां तक कि सारे ख़ंदक़ वाले खा-खाकर चले गए और खजूर थी कि कपड़ों के

---

1. सहीह बुख़ारी, 2/589
2. वही 2/588
3. जामेअ तिर्मिज़ी, मिश्कातुल मसाबीह 2/448
4. यह घटना सहीह बुख़ारी में रिवायत की गई है, देखिए 2/588, 589

किनारों से बाहर गिर रही थी।[1]

इन्हीं दिनों में इन दोनों घटनाओं से कहीं बढ़कर एक और घटना घटी, जिसे इमाम बुख़ारी ने हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत की है। हज़रत जाबिर का बयान है कि हम लोग ख़ंदक़ खोद रहे थे कि एक बड़ा पत्थर मिला, टुकड़ा आड़े आ गया। लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह चट्टाननुमा टुकड़ा ख़ंदक़ में रुकावट बन गया है। आपने फ़रमाया, मैं उतर रहा हूं। इसके बाद आप उठे। आपने पेट पर पत्थर बांधा हुआ था—हमने तीन दिन से कुछ चखा न था—फिर नबी सल्ल० ने कुदाल लेकर मारा, तो वह चट्टाननुमा टुकड़ा भुरभुरे ढेर में बदल गया।[2]

हज़रत बरा रज़ि० का बयान है कि ख़ंदक़ (की खुदाई) के मौक़े पर कुछ हिस्सों में एक बड़ी चट्टान आ पड़ी, जिससे कुदाल उचट जाती थी, कुछ टूटता ही न था। हमने रसूलुल्लाह से इसकी शिकायत की। आप तशरीफ़ लाए, कुदाल ली और बिस्मिल्लाह कहकर एक चोट मारी, (तो एक टुकड़ा टूट गया) और फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! मुझे शामदेश की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त वहां के लाल महलों को देख रहा हूं।

फिर दूसरी चोट लगाई तो एक और टुकड़ा कट गया और फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! मुझे फ़ारस दिया गया है। अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त मदाइन का सफ़ेद महल देख रहा हूं।

फिर तीसरी चोट लगाई और फ़रमाया, बिस्मिल्लाह ! तो बाक़ी चट्टान भी कट गई, फिर फ़रमाया अल्लाहु अक्बर ! मुझे यमन की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त अपनी इस जगह से सनआ के फाटक देख रहा हूं।[3]

इब्न इस्हाक़ ने ऐसी ही रिवायत हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़िक्र की है।[4]

चूंकि मदीना उत्तर के अलावा बाक़ी दिशाओं से हर्रे (लावे की चट्टानों) पहाड़ों और खजूर के बाग़ों से घिरा हुआ है और नबी सल्ल० एक माहिर और

---

1. इब्ने हिशाम, 2/218
2. सहीह बुख़ारी 2/588
3. सुनने नसई 2/56, मुस्नद अहमद। ये शब्द नसई के नहीं हैं और नसई में 'सहाबा में से किसी एक व्यक्ति' का उल्लेख है।
4. इब्ने हिशाम 2/219

अनुभवी फ़ौजी की हैसियत से यह जानते थे कि मदीना पर इतनी बड़ी फ़ौज का हमला केवल उत्तर ही से हो सकता है। इसलिए आपने सिर्फ़ उत्तर दिशा ही में ख़ंदक़ खुदवाई।

मुसलमानों ने ख़ंदक़ खोदने का काम बराबर जारी रखा। दिन भर खुदाई करते और शाम को घर पलट आते, यहां तक कि मदीने की दीवारों तक कुफ़्फ़ार की भारी फ़ौज के पहुंचने से पहले निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक़ ख़ंदक़ तैयार हो गई।[1]

उधर क़ुरैश अपनी चार हज़ार की फ़ौज लेकर मदीना पहुंचे तो रौमा, जर्फ़ और ज़ग़ाबा के बीच मजमउल अस्याल में पड़ाव डाला और दूसरी ओर ग़तफ़ान और उनके नज्दी साथी छः हज़ार की फ़ौज लेकर आये, तो उहुद के पूर्वी किनारे पर स्थित ज़ंब नक़्मी में पड़ाव डाल दिया।

'और जब ईमान वालों ने इन जत्थों को देखा, तो कहा, यह तो वही चीज़ है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वायदा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच ही फ़रमाया था और इस (हालत) ने उनके ईमान और आज्ञापालन-भाव को और बढ़ा दिया।' (33/22)

लेकिन मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर नफ़्स लोगों की नज़र उस फ़ौज पर पड़ी तो उनके दिल दहल गए—

'और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कह रहे थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वायदा किया था, वह मात्र धोखा था।' (33/12)

बहरहाल उस फ़ौज से मुक़ाबले के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार मुसलमानों की फ़ौज लेकर तशरीफ़ लाए और सलअ पहाड़ी की ओर पीठ करके क़िलाबन्दी की शक्ल अख़्तियार कर ली। सामने ख़ंदक़ थी, जो मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के बीच रुकावट थी। मुसलमान का कोड शब्द यह था 'हामीम! इनकी मदद न की जाए।'

मदीने का प्रबन्ध हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम के हवाले किया गया था और औरतों और बच्चों को मदीने के क़िलों और गढ़ियों में सुरक्षित कर दिया गया था।

जब मुश्रिक हमले की नीयत से मदीने की ओर बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक चौड़ी-सी ख़ंदक़ उनके और मदीना के बीच रोक बन गई है। मजबूर होकर उन्हें घेराव डालना पड़ा, हालांकि वे घरों से चलते वक़्त इसके लिए तैयार होकर

1. इब्ने हिशाम 3/220, 221

नहीं आए थे, क्योंकि प्रतिरक्षा की यह योजना, ख़ुद उनके कहने के मुताबिक़, एक ऐसी चाल थी जिसे अरब जानते ही न थे, इसलिए उन्होंने इस मामले को सिरे से अपने हिसाब में दाख़िल ही न किया था।

मुश्रिक ख़ंदक़ के पास पहुंच कर ग़ुस्से में भरे हुए चक्कर काटने लगे। उन्हें ऐसे कमज़ोर बिन्दु की खोज थी जहां से वे उतर सकें।

इधर मुसलमान उनकी चलत-फिरत पर पूरी-पूरी नज़र रखे हुए थे और उन पर तीर बरसाते रहते थे, ताकि उन्हें ख़ंदक़ के क़रीब आने की हिम्मत न हो, वे इसमें न कूद सकें और न मिट्टी डालकर पार करने के लिए रास्ता बना सकें।

उधर क़ुरैश के घुड़सवारों को गवारा न था कि ख़ंदक़ के पास घेराव के नतीजों के इंतिज़ार में वे बे-फ़ायदा पड़े रहें। यह उनकी आदत और शान के ख़िलाफ़ बात थी। चुनांचे उनकी एक टीम ने, जिनमें अम्र बिन अब्दे वुद्द, इक्रिमा बिन अबू जह्ल और ज़ुरार बिन ख़त्ताब वग़ैरह थे एक तंग जगह से ख़ंदक़ पार कर ली और उनके घोड़े ख़ंदक़ और सलअ के बीच चक्कर काटने लगे।

इधर से हज़रत अली रज़ि० कुछ मुसलमानों के साथ निकले और जिस जगह से उन्होंने घोड़े कुदाए थे, उसे क़ब्ज़े में लेकर उनकी वापसी का रास्ता बन्द कर दिया। इस पर अम्र बिन अब्दे वुद्द ने लड़ने के लिए ललकारा। हज़रत अली रज़ि० दो-दो हाथ करने के लिए मुक़ाबले में पहुंचे और एक ऐसा जुमला फेंका कि वह गुस्से में आकर घोड़े से कूद पड़ा और उसकी कूचें काटकर, चेहरा मारकर हज़रत अली के आमने-सामने आ गया। बड़ा बहादुर और शहज़ोर था। दोनों में ज़ोरदार टक्कर हुई। एक ने दूसरे पर बढ़-चढ़कर वार किए, आख़िर में हज़रत अली रज़ि० ने उसका काम तमाम कर दिया। बाक़ी मुश्रिक भाग कर ख़ंदक़ पार चले गए। वे इतने आतंकित थे कि इक्रिमा ने भागते हुए अपना नेज़ा भी छोड़ दिया।

मुश्रिकों ने किसी-किसी दिन ख़ंदक़ पार करने या उसे पाट कर रास्ता बनाने की बड़ी ज़बरदस्त कोशिश की, लेकिन मुसलमानों ने बड़ी अच्छी तरह उन्हें दूर रखा और उन्हें इस तरह तीरों से छीला और ऐसी हिम्मत से उनकी तीरंदाज़ी का मुक़ाबला किया, कि उनकी हर कोशिश नाकाम हो गई।

इसी तरह के ज़ोरदार मुक़ाबलों के बीच अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० की कुछ नमाज़ें भी फ़ौत हो गई थीं।

चुनांचे बुख़ारी-मुस्लिम दोनों में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ख़ंदक़ के दिन आए और कुफ़्फ़ार को सख़्त-सुस्त कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज मैं बड़ी

मुश्किल से सूरज डूबते-डूबते नमाज़ पढ़ सका।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और मैंने तो अल्लाह की क़सम! अभी नमाज़ पढ़ी ही नहीं है। इसके बाद हम लोग नबी सल्ल० के साथ बुतहान में उतरे। आपने नमाज़ के लिए वुज़ू फ़रमाया और हमने भी वुज़ू किया। फिर आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी। यह सूरज डूब चुकने की बात है। इसके बाद मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी।[1]

नबी सल्ल० को इस नमाज़ के फ़ौत होने का इतना मलाल था कि आपने मुश्रिकों के लिए बद-दुआ कर दी। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने ख़ंदक़ के दिन फ़रमाया, अल्लाह इन मुश्रिकों समेत इनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे। जिस तरह इन्होंने हमको बीच की नमाज़ को अदा करने से रोके रखा, यहां तक कि सूरज डूब गया।[2]

मुस्नद अहमद और मुस्नद शाफ़ई में रिवायत है कि मुश्रिकों ने आपको जुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा की नमाज़ों के वक़्त लड़ाई में लगाए रखा, चुनांचे आपने ये सारी नमाज़ें इकट्ठा पढ़ीं।

इमाम नववी फ़रमाते हैं कि इन रिवायतों में मेल की शक्ल यह है कि ख़ंदक़ की लड़ाई का सिलसिला कई दिन तक जारी रहा। पस किसी दिन एक स्थिति का सामना करना पड़ा और किसी दिन दूसरी।[3]

यहीं से यह बात भी निकलती है कि मुश्रिकों की ओर से ख़ंदक़ पार करने की कोशिश और मुसलमानों की ओर से लगातार प्रतिरक्षा कई दिन तक चलती रही, मगर चूंकि दोनों फ़ौजों के बीच ख़ंदक़ रोक थी, इसलिए आमने-सामने की ख़ूनी लड़ाई की नौबत न आ सकी, बल्कि सिर्फ़ तीरंदाज़ी होती रही।

इसी तीरंदाज़ी में दोनों फ़रीक़ों के कुछ लोग मारे भी गए, लेकिन उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है यानी छः मुसलमान और दस मुश्रिक, जिनमें से एक या दो आदमी तलवार से क़त्ल किए गए थे।

इसी तीरंदाज़ी के दौरान हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक तीर लगा, जिससे उनके दस्ते की शह रग कट गई। उन्हें हबान बिन अरक़ा नामी एक क़ुरैशी मुश्रिक का तीर लगा था।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/590
2. सहीह बुख़ारी 2/590
3. मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 287, शरह मुस्लिम, नववी 1/227

हज़रत साद ने (घायल होने के बाद) दुआ की कि ऐ अल्लाह ! तू जानता है कि जिस क़ौम ने तेरे रसूल को झुठलाया और उन्हें निकाल बाहर किया, उनसे तेरी राह में जिहाद करना मुझे जितना प्रिय है, उतना किसी और क़ौम से नहीं है। ऐ अल्लाह ! मैं समझता हूं कि अब तूने हमारी और उनकी लड़ाई को आख़िरी मरहले तक पहुंचा दिया है, पस अगर क़ुरैश की लड़ाई कुछ बाक़ी रह गई हो, तो मुझे उनके लिए बाक़ी रख कि मैं उनसे तेरी राह में जिहाद करूं और अगर तूने लड़ाई ख़त्म कर दी है, तो इसी घाव को जारी करके इसे मेरी मौत की वजह बना दे।[1]

उनकी इस दुआ का आख़िरी टुकड़ा यह था (लेकिन) मुझे मौत न दे, यहां तक कि बनू क़ुरैज़ा के मामले में मेरी आंखों को ठंडक हासिल हो जाए।[2]

बहरहाल एक ओर मुसलमान लड़ाई के मोर्चे पर इन परेशानियों को सहन कर रहे थे, तो दूसरी ओर षड्यंत्र के सांप अपने बिलों में हरकत कर रहे थे और इस कोशिश में थे कि मुसलमानों के देह में अपना विष उतार दें।

चुनांचे बनू नज़ीर का सबसे बड़ा अपराधी, हुइ बिन अख़तब, बनू क़ुरैज़ा के मुहल्ले में आया और उनके सरदार काब बिन असद क़ुरज़ी के पास हाज़िर हुआ। यह काब बिन असद वही आदमी है जो बनू क़ुरैज़ा की ओर से वायदा-इक़रार करने का अधिकारी था और जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह समझौता किया था कि लड़ाई के मौक़ों पर आपकी मदद करेगा। (जैसा कि पीछे के पन्नों में गुज़र चुका है।)

हुइ ने आकर उसके दरवाज़े पर दस्तक दी, तो उसने दरवाज़ा अन्दर से बंद कर लिया। मगर हुइ उससे ऐसी-ऐसी बातें करता रहा कि आख़िरकार उसने दरवाज़ा खोल ही दिया।

हुइ ने कहा, ऐ काब ! मैं तुम्हारे पास ज़माने की इज़्ज़त और चढ़ा हुआ समुद्र लेकर आया हूं। मैंने क़ुरैश को उसके सरदारों और नेताओं सहित लाकर रूमा के मजमउल अस्याल में उतार दिया है और बनू ग़तफ़ान से उनके सरदारों और नेताओं समेत उहुद के पास ज़म्ब नक़मी में पड़ाव डलवा दिया है। इन लोगों ने मुझसे वायदा-इक़रार किया है कि वे मुहम्मद (सल्ल०) और उनके साथियों का पूरा सफ़ाया किए बिना यहां से न टलेंगे।

काब ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! तुम मेरे पास ज़माने की ज़िल्लत और बरसा हुआ बादल लेकर आए हो जो सिर्फ़ गरज-चमक रहा है, पर उसमें कुछ रह नहीं

1. सहीह बुख़ारी, 2/591
2. इब्ने हिशाम 2/227

गया है। हुइ! तुझ पर अफ़सोस! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे। मैंने मुहम्मद में सच्चाई और वफ़ादारी के सिवा कुछ नहीं देखा है।

मगर हुइ उसको बराबर चोटी और कंधे में बटता और लपेटता रहा, यहां तक कि उसे राम कर ही लिया। अलबत्ता उसे इस मक़्सद के लिए वायदा व इक़रार करना पड़ा कि अगर क़ुरैश ने मुहम्मद को ख़त्म किए बग़ैर वापसी की राह ली, तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे क़िले में दाख़िल हो जाऊंगा, फिर जो अंजाम तुम्हारा होगा, वही मेरा भी होगा।

हुइ के इस क़ौल-क़रार के बाद काब बिन असद ने रसूलुल्लाह सल्ल० से किया हुआ समझौता तोड़ दिया और मुसलमानों के साथ तै की हुई ज़िम्मेदारियों से बरी होकर उनके ख़िलाफ़ मुश्रिकों की ओर से लड़ाई में शरीक हो गया।[1]

इसके बाद क़ुरैज़ा के यहूदी अमली तौर पर जंगी कार्रवाइयों में लग गए।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०, हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० के फ़ारेअ नामी क़िले के अन्दर थीं। हज़रत हस्सान औरतों और बच्चों के साथ वहीं थे।

हज़रत सफ़िया रज़ि० कहती हैं कि हमारे पास से एक यहूदी गुज़रा और क़िले का चक्कर काटने लगा। यह उस वक़्त की बात है, जब बनू क़ुरैज़ा रसूलुल्लाह सल्ल० से किया हुआ वायदा-क़रार तोड़कर आपसे लड़ने पर उतर आए थे और हमारे और उनके दर्मियान कोई न था, जो हमारी रक्षा करता. . . रसूलुल्लाह सल्ल० मुसलमानों समेत दुश्मन से मुक़ाबला करने में लगे हुए थे। अगर इस पर कोई हमलावर हो जाता, तो आप उन्हें छोड़कर आ नहीं सकते थे। इसलिए मैंने कहा, ऐ हस्सान! यह यहूदी, जैसा कि आप देख रहे हैं, क़िले का चक्कर लगा रहा है और मुझे ख़ुदा की क़सम! डर है कि यह बाक़ी यहूदियों को भी हमारी कमज़ोरी से आगाह कर देगा। उधर रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० इस तरह फंसे हुए हैं कि हमारी मदद को नहीं आ सकते, इसलिए आप जाइए और उसे क़त्ल कर दीजिए।

हज़रत हस्सान ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप जानती ही हैं कि मैं इस काम का आदमी नहीं।

हज़रत सफ़िया कहती हैं, अब मैंने ख़ुद अपनी कमर बांधी, फिर स्तून की एक लकड़ी ली और इसके बाद क़िले से उतरकर उस यहूदी के पास पहुंची और उसे लकड़ी मार-मारकर उसका ख़ात्मा कर दिया।

---

1. इब्ने हिशाम 2/220, 221

इसके बाद क़िले में वापस आई और हस्सान से कहा, जाइए, इसका हथियार और सामान उतार लीजिए, चूंकि वह मर्द है, इसलिए मैंने उसका हथियार नहीं उतारा।

हस्सान ने कहा, मुझे उसके हथियार और सामान की कोई ज़रूरत नहीं।[1]

सच तो यह है कि मुसलमान बच्चों और औरतों की हिफ़ाज़त पर रसूलुल्लाह सल्ल० की फूफी के इस वीरतापूर्ण कार्य का बड़ा गहरा और अच्छा असर पड़ा। इस कार्रवाई से शायद यहूदियों ने समझा कि इस क़िले और गढ़ियों में भी मुसलमानों की रक्षात्मक सेना मौजूद है, हालांकि वहां कोई फ़ौज न थी, इसलिए यहूदियों को दोबारा इस क़िस्म की जुर्रत न हुई। अलबत्ता वे बुतपरस्त हमलावरों के साथ अपने वायदे व क़रार के मुताबिक़ उन्हें बराबर रसद पहुंचाते रहे, यहां तक कि मुसलमानों ने उनकी रसद के बीस ऊंटों पर क़ब्ज़ा भी कर लिया।

बहरहाल यहूदियों के वचन-भंग करने की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुई तो आपने तुरन्त उसकी खोज की ओर तवज्जोह फ़रमाई, ताकि बनू क़ुरैज़ा के इरादे मालूम हो जाएं और उसकी रोशनी में फ़ौजी दृष्टिकोण से जो क़दम उठाना मुनासिब हो, उसे उठाया जाए।

चुनांचे आपने इस ख़बर की पड़ताल के लिए हज़रत साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा और ख़्वात बिन जुबैर रज़ि० को रवाना फ़रमाया और हिदायत की कि जाओ, देखो, बनी क़ुरैज़ा के बारे में जो कुछ मालूम हुआ है, वह वाक़ई सही है या नहीं। अगर सही है, तो वापस आकर सिर्फ़ मुझे बता देना और वह भी इशारों-इशारों में, लोगों के बाज़ू मत तोड़ना और अगर वे वायदा-क़रार पर क़ायम रहें, तो फिर लोगों के दर्मियान एलानिया उसका ज़िक्र कर देना।

जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के क़रीब पहुंचे, तो उन्हें बड़ी ढिठाई और दुष्टता पर उतारू पाया। उन्होंने एलानिया गालियां बकीं, दुश्मनी की बातें कीं और रसूलुल्लाह सल्ल० की तौहीन की। कहने लगे, अल्लाह का रसूल कौन? हमारे और मुहम्मद के बीच न क़ौल है न क़रार।

यह सुनकर वे लोग वापस आ गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचकर स्थिति की ओर इशारा करते हुए सिर्फ़ इतना कहा, अज़्ल व क़ारा। उद्देश्य यह था कि जिस तरह अज़्ल व क़ारा ने रजीअ के लोगों के साथ ग़द्दारी की थी, उसी तरह यहूदी भी ग़द्दारी पर तुले हुए हैं।

1. इब्ने हिशाम 2/228

इसके बावजूद कि इन सहाबा किराम ने सच छिपाने की कोशिश की, लेकिन आम लोगों को स्थिति का पता लग गया और इस तरह एक भयानक ख़तरा उनके सामने आ खड़ा हुआ।

सच तो यह है कि उस वक़्त मुसलमान बड़ी संगीन परिस्थितियों से गुज़र रहे थे। पीछे बनू क़ुरैज़ा थे, जिनका हमला रोकने के लिए उनके और मुसलमानों के बीच में कोई न था? आगे मुश्रिकों की भारी फ़ौज थी, जिन्हें छोड़कर हटना मुम्किन न था, फिर मुसलमान बच्चे और औरतें थीं जो किसी सुरक्षा के बिना ग़द्दार यहूदियों के क़रीब ही थे। इसलिए लोगों में बड़ी बेचैनी पैदा हुई, जिसकी स्थिति इस आयत में बयान की गई है—

'और निगाहें टेढ़ी हो गईं, दिल हलक़ में आ गए और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त ईमान वालों की आज़माइश की गई और उन्हें बहुत तेज़ झिंझोड़ा गया।' (33/101)

फिर इसी मौक़े पर कुछ मुनाफ़िक़ों के निफ़ाक़ ने भी सर निकाला। चुनांचे वे कहने लगे कि मुहम्मद तो हमसे वायदे करते थे कि हम क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने खाएंगे और यहां यह हालत है कि पेशाब-पाख़ाने के लिए निकलने में भी जान की ख़ैर नहीं।

कुछ और मुनाफ़िक़ों ने अपनी क़ौम के बड़ों के सामने यहां तक कहा कि हमारे घर दुश्मन के सामने खुले पड़े हैं। हमें इजाज़त दीजिए कि हम अपने घरों को वापस चले जाएं, क्योंकि हमारे घर शहर से बाहर हैं।

नौबत यहां तक पहुंच चुकी थी कि बनू सलमा के क़दम उखड़ रहे थे और वे पसपाई की सोच रहे थे। इन्हीं लोगों के बारे में अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया है—

'और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कह रहे थे कि हमसे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने जो वायदा किया है, वह फ़रेब के सिवा कुछ नहीं और जब उनकी एक जमाअत ने कहा कि ऐ यसरिब वालो! तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए वापस चलो और उनका एक फ़रीक़ नबी से इजाज़त मांग रहा था, कहता था, हमारे घर ख़ाली पड़े हैं, हालांकि वे ख़ाली नहीं पड़े थे, ये लोग सिर्फ़ फ़रार चाहते थे।' (33 : 12-13)

एक ओर फ़ौज का यह हाल था, दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० की यह स्थिति थी कि आपने बनू क़ुरैज़ा के वचन-भंग की ख़बर सुनकर अपना सर और चेहरा कपड़े से ढक लिया और देर तक चित लेटे रहे। इस स्थिति को देखकर लोगों की बेचैनी और ज़्यादा बढ़ गई, लेकिन इसके बाद आप पर आशा की लहर छा गई। और आप अल्लाहु अक्बर कहते हुए खड़े हुए और फ़रमाया,

मुसलमानो ! अल्लाह की मदद और जीत की ख़ुशख़बरी सुन लो।

इसके बाद आपने पेश आने वाले हालात से निमटने का प्रोग्राम बनाया और इसी प्रोग्राम के एक हिस्से के तौर पर मदीना की निगरानी के लिए फ़ौज का एक हिस्सा रवाना फ़रमाते रहे, ताकि मुसलमानों को ग़ाफ़िल देखकर यहूदियों की ओर से औरतों और बच्चों पर अचानक कोई हमला न हो जाए।

लेकिन इस मौक़े पर एक निर्णायक क़दम उठाने की ज़रूरत थी, जिसके ज़रिए दुश्मन के अलग-अलग गिरोहों को एक दूसरे से बे-ताल्लुक़ कर दिया जाए। इस मक़्सद के लिए आपने सोचा कि बनू ग़तफ़ान के दोनों सरदारों उऐना बिन हिस्न और हारिस बिन औफ़ से मदीना की एक तिहाई पैदावार पर समझौता कर लें, ताकि ये दोनों सरदार अपने-अपने क़बीले लेकर वापस चले जाएं और मुसलमान अकेले क़ुरैश पर जिनकी ताक़त का बार-बार अन्दाज़ा लगाया जा चुका था, भारी चोट लगाने के लिए फ़ारिग़ हो जाएं।

इस तज्वीज़ पर कुछ बातें भी हुईं, पर जब आपने हज़रत साद बिन मुआज़ और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० से इस तज्वीज़ के बारे में मश्विरा किया तो उन दोनों ने एक ज़ुबान होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है तो तब बिना कुछ कहे-सुने हम इसे मान लेते हैं और अगर आप सिर्फ़ हमारे लिए ऐसा करना चाहते हैं, तो हमें इसकी ज़रूरत नहीं। जब हम लोग और ये लोग दोनों शिर्क और बुतपरस्ती कर रहे थे, तब तो वे लोग मेज़बानी (सत्कार) या क्रय-विक्रय के अलावा किसी और तरीक़े से किसी एक दाने का भी लालच नहीं कर सकते थे, तो भला अब जबकि अल्लाह ने हमें इस्लाम जैसी नेमत दी है और आपके ज़रिए इज़्ज़त बख़्शी है, हम इन्हें अपना माल देंगे ? ख़ुदा क़ी क़सम, हम इन्हें सिर्फ़ अपनी तलवार देंगे।

आपने इन दोनों की राय को दुरुस्त पाया और फ़रमाया कि जब मैंने देखा कि सारा अरब एक कमान खींचकर तुम पर पिल पड़ा है, तो केवल तुम्हारे लिए मैंने यह काम करना चाहा था।

फिर अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दुश्मन में फूट पड़ गई। उनका मोर्चा टूट गया। उनकी धार कुंठित हो गई।

हुआ यह कि बनू ग़तफ़ान के एक साहब, जिनका नाम नुऐम बिन मसऊद बिन आमिर अशजई था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं मुसलमान हो गया हूं, लेकिन मेरी क़ौम को मेरे इस्लाम लाने का पता नहीं है, इसलिए आप मुझे कोई हुक्म फ़रमाइए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम सिर्फ़ एक आदमी हो (इसलिए कोई फ़ौजी क़दम नहीं उठा सकते, अलबत्ता) जितना संभव हो, उनमें फूट डालो, और उनका मनोबल गिराओ, क्योंकि लड़ाई तो चालबाज़ी का नाम है।

इस पर हज़रत नुऐम तुरन्त ही बनू क़ुरैज़ा के पास पहुंचे। अज्ञानता-युग में उनसे उनका बड़ा मेल-जोल था। वहां पहुंचकर उन्होंने कहा, आप लोग जानते हैं कि मुझे आप लोगों से मुहब्बत और ख़ास ताल्लुक़ है।

उन्होंने कहा, जी हां।

नुऐम ने कहा, अच्छा तो सुनिए कि क़ुरैश का मामला आप लोगों से अलग है। यह इलाक़ा आपका अपना इलाक़ा है। यहां आपका घर-बार है, माल व दौलत है, बाल-बच्चे हैं, आप इन्हें छोड़कर कहीं और नहीं जा सकते, मगर जब क़ुरैश और ग़तफ़ान मुहम्मद से लड़ने आए, तो आपने मुहम्मद के ख़िलाफ़ उनका साथ दिया। ज़ाहिर है, उनका यहां न घर-बार है, न माल व दौलत है, न बाल-बच्चे हैं, इसलिए उन्हें मौक़ा मिला तो क़दम उठाएंगे, वरना बोरिया-बिस्तर बांधकर चल देंगे। फिर आप लोग होंगे और मुहम्मद होंगे, इसलिए वह जैसे चाहेंगे, बदला लेंगे।

इस पर बनू क़ुरैज़ा चौंके और बोल, नुऐम! बताइए, अब क्या किया जा सकता है?

उन्होंने कहा, देखिए! क़ुरैश जब तक आप लोगों को अपने कुछ आदमी बंधक के तौर पर न दें, आप उनके साथ लड़ाई में न शरीक हों।

क़ुरैज़ा ने कहा, आपने बहुत मुनासिब राय दी है।

इसके बाद हज़रत नुऐम सीधे क़ुरैश के पास पहुंचे और बोले, आप लोगों से मुझे जो मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही का जज़्बा है, उसे तो आप जानते ही हैं?

उन्होंने कहा, जी हां।

हज़रत नुऐम ने कहा, अच्छा तो सुनिए कि यहूदियों ने मुहम्मद और उनके साथियों से जो अपने क़ौल व क़रार तोड़े थे, इस पर वे लज्जित हैं और अब उनमें यह बात चल रही है कि वे (यहूदी) आप लोगों से कुछ बंधक लेकर उन (मुहम्मद) के हवाले कर देंगे और फिर आप लोगों के ख़िलाफ़ मुहम्मद से अपना मामला मज़बूत करेंगे, इसलिए अगर वे बंधक मांगें तो आप हरगिज़ न दें।

इसके बाद ग़तफ़ान के पास भी जाकर यही बात दोहराई। (उनके भी कान खड़े हो गए)

इसके बाद जुमा (शुक्रवार) और सनीचर के बीच की रात को क़ुरैश ने

यहूदियों के पास यह सन्देश भेजा कि हमारा ठहराव किसी सही और उचित जगह पर नहीं है, घोड़े और ऊंट मर रहे हैं, इसलिए उधर से आप और इधर से हम लोग उठें और मुहम्मद पर हमला कर दें।

लेकिन यहूदियों ने जवाब में कहलाया कि आज सनीचर का दिन है और आप जानते हैं कि हमसे पहले जिन लोगों ने इस दिन के बारे में शरीअत के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की थी, उन्हें कैसे अज़ाब से दोचार होना पड़ा था। इसके अलावा आप लोग जब तक अपने कुछ आदमी हमें बंधक के रूप में न दे दें, हम लड़ाई में शरीक न होंगे।

दूत जब यह जवाब लेकर वापस आए, तो क़ुरैश और ग़तफ़ान ने कहा, अल्लाह की क़सम! नुऐम ने सच ही कहा था। चुनांचे उन्होंने यहूदियों को कहला भेजा कि ख़ुदा की क़सम! हम आपको कोई आदमी न देंगे, बस, आप लोग हमारे साथ ही निकल पड़ें और (दोनों ओर से) मुहम्मद पर हल्ला बोल दिया जाए।

यह सुनकर क़ुरैज़ा ने आपस में कहा, अल्लाह की क़सम! नुऐम! तुमने सच ही कहा था, इस तरह दोनों फ़रीक़ का एतबार एक दूसरे से उठ गया। उनकी सफ़ों में फूट पड़ गई और उनके हौसले टूट गए।

इस बीच मुसलमान अल्लाह से यह दुआ कर रहे थे—

'ऐ अल्लाह! हमारी परंदापोशी फ़रमा और हमें ख़तरों से बचा ले।'

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे थे—

'ऐ अल्लाह! किताब उतारने वाले और जल्द हिसाब लेने वाले, इन फ़ौजों को पसपा कर। ऐ अल्लाह! इन्हें परास्त कर और झिंझोड़कर रख दे।'[1]

आख़िरकार अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० और मुसलमानों की दुआएं सुन लीं, चुनांचे मुश्रिकों की सफ़ों में फूट पड़ जाने और बद-दिली और पस्तहिम्मती आ जाने के बाद अल्लाह ने उन पर तेज़ हवाओं का तूफ़ान भेज दिया, जिसने उनके ख़ेमे उखाड़ दिए, हांडियां उलट दीं, ख़ेमों की खूंटियां उखाड़ दीं, किसी चीज़ को क़रार न रहा और उसके साथ फ़रिश्तों की फ़ौज भेज दी, जिसने उन्हें हिला डाला और उनके दिलों में रौब और डर डाल दिया।

इसी ठंडी और कड़कड़ाती रात में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० को कुफ़्फ़ार की ख़बर लाने के लिए भेजा, वह उनके मोर्चे में पहुंचे, तो वहां ठीक यही हालत पाई जा रही थी और

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद 1/144, किताबुल मग़ाज़ी 2/590

मुश्रिक वापसी के लिए तैयार हो चुके थे। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने नबी सल्ल० की सेवा में वापस आकर उनके रवाना होने की ख़बर दी।

चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की तो (देखा कि मैदान साफ़ है) अल्लाह ने दुश्मन को किसी भलाई के हासिल होने का मौक़ा दिए बिना उसको ग़म व ग़ुस्सा के साथ वापस कर दिया है और उनसे लड़ने के लिए अकेले काफ़ी हुआ है।

ग़रज़ यह कि इस तरह अल्लाह ने अपना वायदा पूरा किया, अपनी फ़ौज को सुर्ख़रू किया, अपने बन्दे की मदद की और अकेले उस भारी फ़ौज को पसपा किया।

चुनांचे इसके बाद आप मदीना वापस आ गए।

ग़ज़्वा ख़ंदक़ सबसे सही कथन के अनुसार शव्वाल 05 हि० में पेश आया था और मुश्रिकों ने एक महीने या लगभग एक महीने तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का घेराव किए रखा था।

कुल मिलाकर, तमाम स्रोतों पर नज़र डालने से मालूम होता है कि घेराव की शुरुआत शव्वाल में हुई थी और अन्त ज़ीक़ादा में।

इब्ने साद का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जिस दिन ख़ंदक़ से वापस हुए, बुध का दिन था और ज़ीक़ादा के ख़त्म होने में सिर्फ़ सात दिन बाक़ी थे।

अहज़ाब की लड़ाई (ख़ंदक़ का ग़ज़्वा) सच तो यह है कि घाटों की लड़ाई न थी, बल्कि तनावों की लड़ाई थी। इसमें कोई ख़ूनी झड़प नहीं हुई, फिर भी यह इस्लामी तारीख़ (इतिहास) की एक निर्णायक लड़ाई थी।

चुनांचे इसके नतीजे में मुश्रिकों के हौसले टूट गए और यह स्पष्ट हो गया कि अरब की कोई भी ताक़त मुसलमानों की इस छोटी सी ताक़त को, जो मदीने में पनप रही थी, ख़त्म नहीं कर सकती, क्योंकि अहज़ाब की लड़ाई में जितनी बड़ी ताक़त जुटा ली गई थी, अब अरबों के बस की बात न थी, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अहज़ाब की वापसी के बाद फ़रमाया—

'अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे, वे हम पर चढ़ाई न करेंगे। अब हमारी फ़ौज उनकी ओर जाएगी।'[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 5/290

ग़ज़वा बनू क़ुरैज़ा

जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ से वापस तशरीफ़ लाए, उसी दिन ज़ुहर के वक़्त, जबकि आप हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान में ग़ुस्ल फ़रमा रहे थे, हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और फ़रमाया—

'क्या आपने हथियार रख दिए, हालांकि अभी फ़रिश्तों ने हथियार नहीं रखे और मैं भी क़ौम का पीछा करके बस वापस चला आ रहा हूं। उठिए और अपने साथियों को लेकर बनू क़ुरैज़ा का रुख़ कीजिए। मैं आगे-आगे जा रहा हूं। उनके क़िलों में भूकम्प पैदा करूंगा और उनके दिलों में रौब और आतंक डालूंगा।'

यह कहकर हज़रत जिब्रील फ़रिश्तों को साथ लेकर रवाना हो गए।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से मुनादी कराई कि जो आदमी 'सुनने और मानने' पर क़ायम है, वह अस्र की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा ही में पढ़े। इसके बाद मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को सौंपा और हज़रत अली को लड़ाई का फरेरा देकर आगे भेज दिया। वे बनू क़ुरैज़ा के क़िलों के क़रीब पहुंचे, तो बनू क़ुरैज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्ल० पर गालियों की बौछार शुरू कर दी।

इतने में अल्लाह के रसूल सल्ल० भी मुहाजिरों और अंसार के साथ रवाना हो चुके थे। आप बनू क़ुरैज़ा के क़रीब ही 'अना' नामी एक कुंएं पर ठहर गए। आम मुसलमानों ने भी लड़ाई का एलान सुनकर तुरन्त बनी क़ुरैज़ा के इलाक़े का रुख़ किया।

रास्ते में अस्र की नमाज़ का हुक्म हो गया, तो कुछ ने कहा कि हम, जैसा कि हमें हुक्म दिया गया है, बनू क़ुरैज़ा पहुंच कर ही अस्र की नमाज़ पढ़ेंगे, यहां तक कि कुछ ने अस्र की नमाज़ इशा के बाद पढ़ी, लेकिन कुछ दूसरे साथियों ने कहा कि आप (सल्ल०) का अभिप्राय यह नहीं था, बल्कि यह था कि हम जल्द से जल्द चल पड़ें। इसलिए उन्होंने रास्ते ही में नमाज़ पढ़ ली। अलबत्ता (जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने यह विवाद आया तो) आपने किसी भी फ़रीक़ को सख़्त-सुस्त नहीं कहा।

बहरहाल अलग-अलग टुकड़ियों में बंटकर इस्लामी फ़ौज बनू क़ुरैज़ा के क़रीब पहुंची और नबी सल्ल० के साथ जा शामिल हुई। फिर बनू क़ुरैज़ा के क़िलों का घेराव कर लिया। इस फ़ौज़ की कुल तायदाद तीन हज़ार थी और

उसमें तीन घोड़े थे।

जब घेराव कड़ा हो गया तो यहूदियों के सरदार काब बिन असद ने उनके सामने तीन प्रस्ताव रखे—

1. या तो इस्लाम क़ुबूल कर लें और मुहम्मद के दीन में दाख़िल होकर अपनी जान, माल और बाल-बच्चों को बचा लें। काब बिन असद ने इस प्रस्ताव को रखते हुए यह भी कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम लोगों पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वह वाक़ई नबी और रसूल हैं और वही हैं जिन्हें तुम अपनी किताब में पाते हो।

2. या अपने बीवी-बच्चों को ख़ुद अपने हाथों से क़त्ल कर दें, फिर तलवार सौंत कर नबी सल्ल० की ओर निकल पड़ें और पूरी ताक़त से टकरा जाएं, इसके बाद या तो जीत जाएं या सबके सब मारे जाएं।

3. या फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० पर धोखे से सनीचर के दिन पिल पड़ें, क्योंकि उन्हें इत्मीनान होगा कि आज लड़ाई नहीं होगी।

लेकिन यहूदियों ने इन तीनों में से कोई भी प्रस्ताव नहीं माना, जिस पर उनके सरदार काब बिन असद ने (झल्लाकर) कहा, तुममें से किसी ने मां की कोख से जन्म लेने के बाद एक रात भी होशमंदी से नहीं गुज़ारी है।

इन तीनों प्रस्तावों को रद्द कर देने के बाद बनू क़ुरैज़ा के सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता रह जाता था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डाल दें और अपनी क़िस्मत का फ़ैसला आप पर छोड़ दें, लेकिन उन्होंने चाहा कि हथियार डालने से पहले अपने कुछ मुसलमान मित्रों से सम्पर्क बना लें। संभव है, पता लग जाए कि हथियार डालने का नतीजा क्या होगा।

चुनांचे उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास सन्देश भेजा कि आप अबू लुबाबा को हमारे पास भेज दें। हम उनसे मश्विरा करना चाहते हैं। अबू लुबाबा उनके मित्र थे और उनके बाग़ और बीवी-बच्चे भी उसी इलाक़े में थे।

जब अबू लुबाबा वहां पहुंचे, तो मर्द लोग उन्हें देखकर उनकी ओर दौड़ पड़े और औरतें और बच्चे उनके सामने धाड़े मार-मारकर रोने लगे। इस स्थिति को देखकर हज़रत अबू लुबाबा पर काफ़ी प्रभाव पड़ा।

यहूदियों ने कहा, अबू लुबाबा! क्या आप उचित समझते हैं कि हम मुहम्मद (सल्ल०) के फ़ैसले पर हथियार डाल दें?

उन्होंने कहा, हां। वरना साथ ही हाथ से हलक़ की ओर इशारा भी कर दिया

जिसका मतलब यह था कि ज़िब्ह कर दिए जाओगे। लेकिन उन्हें फ़ौरन एहसास हुआ कि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के साथ ख़ियानत है।

चुनांचे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस जाने के बजाए सीधे मस्जिदे नबवी पहुंचे और अपने आपको मस्जिद के एक खम्भे से बांध लिया और क़सम खाई कि उन्हें अब रसूलुल्लाह सल्ल० ही अपने मुबारक हाथों से खोलेंगे और वे आगे कभी बनू क़ुरैज़ा की धरती में दाख़िल न होंगे।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महसूस कर रहे थे कि उनकी वापसी में देर हो रही है। फिर जब सविस्तार बातें मालूम हुईं तो फ़रमाया, अगर वह मेरे पास आ गए होते मैं उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर दिए होता, लेकिन जब वह वही काम कर बैठे हैं, तो अब मैं भी उन्हें उनकी जगह से खोल नहीं सकता, यहां तक कि अल्लाह उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले।

उधर अबू लुबाबा के इशारे के बावजूद बनी क़ुरैज़ा ने यही तै किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डाल दें और वह जो फ़ैसला मुनासिब समझें, करें, हालांकि बनू क़ुरैज़ा एक लम्बी मुद्दत तक घेराव सहन कर सकते थे, क्योंकि एक ओर उनके पास भारी मात्रा में खाने-पीने का पर्याप्त सामान था, पानी के सोते और कुंएं थे, मज़बूत और सुरक्षित क़िले थे और दूसरी ओर मुसलमान खुले मैदान में ख़ून में जमाव पैदा करने वाले जाड़े और भूख की सख़्तियां सह रहे थे और ग़ज़्वा ख़ंदक़ की शुरुआत से भी पहले से बराबर लड़ाइयों में लगे रहने की वजह से थकन से चूर-चूर थे, लेकिन बनू क़ुरैज़ा की लड़ाई एक मानसिक लड़ाई थी। अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया था और उनके हौसले टूटते जा रहे थे।

फिर मनोबल का टूटना उस वक़्त अपनी सीमा को पहुंच गया, जब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ने पेशक़दमी फ़रमाई और हज़रत अली रज़ि० ने गरजकर यह एलान कर दिया कि ईमान के फ़ौजियो ! ख़ुदा की क़सम ! अब मैं भी या तो वही चखूंगा जो हमज़ा ने चखाया या उनका क़िला जीत कर रहूंगा।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० का यह संकल्प सुनकर बनू क़ुरैज़ा ने जल्दी से अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले कर दिया कि आप जो फ़ैसला मुनासिब समझें, करें।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया कि मर्दों को बांध दिया जाए। चुनांचे मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी रज़ि० की निगरानी में इन सबके हाथ बांध दिए गए

और औरतों और बच्चों को मर्दों से अलग कर दिया गया।

क़बीला औस के लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ करने लगे कि आपने बनू क़ैनुक़ाअ के साथ जो व्यवहार किया था, वह आपको याद ही है। बनू क़ैनुक़ाअ हमारे भाई ख़ज़रज के मित्र थे और ये लोग हमारे मित्र हैं, इसलिए इन पर एहसान फ़रमाएं।

आपने फ़रमाया, क्या आप लोग इस पर राज़ी नहीं कि इनके बारे में आप ही का एक आदमी फ़ैसला करे?

उन्होंने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, तो यह मामला साद बिन मुआज़ के हवाले है।

औस के लोगों ने कहा, हम इस पर राज़ी हैं।

इसके बाद आपने हज़रत साद बिन मुआज़ को बुला भेजा। वह मदीना में थे। फ़ौज के साथ आए नहीं थे, क्योंकि ख़ंदक़ की लड़ाई के दौरान हाथ की नस कटने की वजह से घायल हो गए थे। उन्हें एक गधे पर सवार करके रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया। जब क़रीब पहुंचे, तो उनके क़बीले के लोगों ने उन्हें दोनों ओर से घेर लिया और कहने लगे, साद! अपने मित्रों के बारे में अच्छाई और एहसान से काम लीजिएगा। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने आपको मध्यस्थ इसीलिए बनाया है कि आप उनसे सद्व्यवहार करें। मगर वह चुपचाप थे, कोई जवाब न दे रहे थे। जब लोगों ने गुज़ारिश की भरमार कर दी, तो बोले—

'अब वक़्त आ गया है कि साद को अल्लाह के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न हो।'

यह सुनकर कुछ लोग उसी वक़्त मदीना आ गए और क़ैदियों की मौत का एलान कर दिया।

इसके बाद जब हज़रत साद रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, अपने सरदार की ओर उठकर बढ़ो।

(लोगों ने बढ़कर) जब उन्हें उतार लिया, तो कहा, ऐ साद! ये लोग आपके फ़ैसले पर उतरे हैं।

हज़रत साद ने कहा, क्या मेरा फ़ैसला इन पर लागू होगा?

लोगों ने कहा, जी हां।

उन्होंने कहा, मुसलमानों पर भी।

लोगों ने कहा, जी हां।

उन्होंने फिर कहा, और जो यहां हैं, उन पर भी ?

उनका इशारा रसूलुल्लाह सल्ल० की आरामगाह की ओर था, मगर मान-सम्मान की वजह से चेहरा दूसरी ओर कर रखा था।

आपने फ़रमाया, जी हां, मुझ पर भी।

हज़रत साद ने कहा, तो इनके बारे में मेरा फ़ैसला यह है कि मर्दों को क़त्ल कर दिया जाए, औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया जाए और माल बांट दिया जाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने इनके बारे में वही फ़ैसला किया है, जो सात आसमानों के ऊपर से अल्लाह का फ़ैसला है।

हज़रत साद का यह फ़ैसला बड़े इंसाफ़ वाला था, क्योंकि बनू क़ुरैज़ा ने मुसलमानों की मौत और ज़िंदगी के सबसे नाज़ुक क्षणों में जो ख़तरनाक बद-अह्दी की थी, वह तो थी ही, इसके अलावा उन्होंने मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए डेढ़ हज़ार तलवारें, दो हज़ार नेज़े, तीन सौ कवच और पांच सौ ढाल जुटा रखे थे, जिस पर विजय के बाद मुसलमानों ने क़ब्ज़ा किया।

इस फ़ैसले के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर बनू क़ुरैज़ा को मदीना लाकर बनू नज्जार की एक औरत के, जो हारिस की बेटी थीं, घर में क़ैद कर दिया गया और मदीना के बाज़ार में ख़ंदक़ें खोदी गईं, फिर उन्हें एक-एक टुकड़ी करके ले जाया गया और इन ख़ंदक़ों (खाइयों) में उनकी गरदनें मार दी गईं।

कार्रवाई शुरू होने के थोड़ी देर बाद बाक़ी क़ैदियों ने अपने सरदार काब बिन असद से मालूम किया कि आपका क्या अन्दाज़ा है ? हमारे साथ क्या हो रहा है ?

उसने कहा, क्या तुम लोग किसी भी जगह समझ-बूझ नहीं रखते ? देखते नहीं कि पुकारने वाला रुक नहीं रहा है और जाने वाला पलट नहीं रहा है ? यह ख़ुदा की क़सम ! क़त्ल है। बहरहाल इन सबकी (जिनकी तायदाद छः और सात सौ के बीच थी) गरदनें मार दी गईं।

इस कार्रवाई के ज़रिए धोखादेही और ख़ियानत के उन सांपों का पूरी तरह ख़ात्मा कर दिया गया, जिन्होंने पक्का अह्द व क़रार तोड़ा था, मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए उनकी ज़िंदगी के बड़े संगीन और नाज़ुक क्षणों में दुश्मन को मदद देकर लड़ाई के बड़े अपराधियों की भूमिका निभाई थी और अब वे सचमुच मुक़दमे और फांसी के हक़दार हो चुके थे।

बनू क़ुरैज़ा की इस तबाही के साथ ही बनू नज़ीर का शैतान और ग़ज़्वा अह्ज़ाब का एक बड़ा अपराधी हुइ बिन अख़तब भी अपने नतीजे को पहुंच गया।

यह आदमी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का बाप था। क़ुरैश और ग़तफ़ान की वापसी के बाद जब बनू क़ुरैज़ा का घेराव किया गया और उन्होंने क़िलाबन्दी की, तो यह भी उनके साथ क़िलाबन्द हो गया था, क्योंकि ग़ज़वा अह्ज़ाब के दिनों में यह आदमी जब काब बिन असद को धोखादेही और ख़ियानत पर तैयार करने के लिए आया था, तो उसका वायदा कर रखा था और अब इसी वायदे को निबाह रहा था।

उसे जिस वक़्त नबी सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया, एक जोड़ा पहने हुए था, जिसे ख़ुद ही हर ओर से एक-एक अंगुल फाड़ रखा था, ताकि उसे माले ग़नीमत में न रखवा लिया जाए। उसके दोनों हाथ गरदन के पीछे रस्सी से एक साथ बंधे हुए थे। उसने रसूलुल्लाह सल्ल० को सम्बोधित करके कहा, सुनिए, मैंने आपकी दुश्मनी पर अपने आपको मलामत नहीं की, लेकिन जो अल्लाह से लड़ता है, मग़्लूब होता है।

फिर लोगों को ख़िताब करते हुए कहा, लोगो! अल्लाह के फ़ैसले में कोई हरज नहीं। यह तो भाग्य का लिखा है और एक बड़ी हत्या है जो अल्लाह ने बनी इसराईल पर लिख दिया था। इसके बाद वह बैठा और उसकी गरदन मार दी गई।

इस घटना में बनू क़ुरैज़ा की एक औरत भी क़त्ल की गई। उसने हज़रत ख़ल्लाद बिन सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हु पर चक्की का पाट फेंककर उन्हें क़त्ल कर दिया था। इसी के बदले उसे क़त्ल कर दिया गया।

रसूलुल्लाह सल्ल० का हुक्म था कि जिसके नाफ़ के नीचे बाल आ चुके हों, उसे क़त्ल कर दिया जाए। चूंकि हज़रत अतीया क़ुरज़ी को अभी बाल नहीं आए थे, इसलिए उन्हें ज़िंदा छोड़ दिया गया। चुनांचे उन्होंने मुसलमान होकर सहाबी होने का शरफ़ हासिल किया।

हज़रत साबित बिन क़ैस ने निवेदन किया कि ज़ुबैर बिन बाता और उसके बाल-बच्चों को उनको भेंट स्वरूप दे दिया जाए, इसकी वजह यह थी कि ज़ैद ने साबित पर कुछ एहसान किए थे। उनका निवेदन स्वीकार कर लिया गया। इसके बाद साबित बिन क़ैस ने ज़ुबैर से कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तुझको और तुम्हारे बाल-बच्चों को मुझे भेंट स्वरूप दे दिया है और मैं इन सबको तुम्हारे हवाले करता हूं। (यानी तुम बाल-बच्चों समेत आज़ाद हो)

लेकिन जब ज़ुबैर बिन बाता को मालूम हुआ कि उसकी क़ौम क़त्ल कर दी गई है, तो उसने कहा, साबित! तुम पर मैंने जो उपकार किया था उसका वास्ता देकर कहता हूं कि मुझे भी दोस्तों तक पहुंचा दो। चुनांचे उसकी भी गरदन मार

कर उसे उसके यहूदी दोस्तों तक पहुंचा दिया गया। अलबत्ता हज़रत साबित ने ज़ुबैर बिन बाता के लड़के अब्दुर्रहमान को ज़िंदा रखा, चुनांचे वह इस्लाम लाकर सहाबी के रुत्बे को पहुंचे।

इसी तरह बनू नज्जार की एक महिला हज़रत उम्मुल मुंज़िर सलमा बिन्त क़ैस ने निवेदन किया समुवाल क़ुरज़ी के लड़के रिफ़ाआ को उनके लिए भेंट स्वरूप दे दिया जाए। उनका निवेदन भी मान लिया गया और रिफ़ाआ को उनके हवाले कर दिया गया। उन्होंने रिफ़ाआ को ज़िंदा रखा और वह भी इस्लाम लाकर सहाबी के रुत्बे को पहुंचे।

कुछ और लोगों ने भी उसी रात हथियार डालने की कार्रवाई से पहले इस्लाम अपना लिया था, इसलिए उनकी भी जान व माल और औलाद बची रही।

उसी रात अम्र नामी एक और व्यक्ति, जिसने बनू क़ुरैज़ा की बद-अह्दी में शिर्कत नहीं की थी, बाहर निकला। उसे पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा ने देख लिया, लेकिन पहचान कर छोड़ दिया, फिर मालूम नहीं वह कहां गया?

बनू क़ुरैज़ा के माल को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांचवां भाग निकालकर बांट दिया। घुड़सवारों को तीन हिस्से दिए, एक हिस्सा उसका अपना, और दो हिस्सा घोड़ों का और पैदल को एक हिस्सा दिया। क़ैदियों और बच्चों को हज़रत साद बिन ज़ैद अंसारी रज़ि० की निगरानी में नज्द भेजकर उनके बदले घोड़े और हथियार ख़रीद लिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए बनू क़ुरैज़ा की औरतों में से हज़रत रैहाना बिन्त अम्र बिन ख़नाफ़ा को चुना। यह इब्ने इस्हाक़ के अनुसार आपकी वफ़ात तक आपकी मिल्कियत में रहीं।[1] लेकिन कलबी का बयान है कि नबी सल्ल० ने उन्हें सन् 06 हि० में आज़ाद करके शादी कर ली थी। फिर जब हज्जतुल विदाअ से वापस तशरीफ़ लाए तो उनका देहान्त हो गया और आपने उन्हें बक़ीअ में दफ़्न कर दिया।[2]

जब बनू क़ुरैज़ा का काम पूरा हो चुका तो नेक बन्दे हज़रत साद बिन मुआज़ की उस दुआ के क़ुबूल होने का वक़्त आ गया, जिसका ज़िक्र ग़ज़वा अह्ज़ाब के दौरान आ चुका है। चुनांचे उनका घाव फूट गया। उस वक़्त वह मस्जिदे नबवी में थे। नबी सल्ल० ने उनके लिए वहीं ख़ेमा लगवा दिया था, ताकि क़रीब ही से उनका पूछना कर लिया करें।

---

1. इब्ने हिशाम 2/245
2. तलक़ीहुल फ़ुहूम, पृ० 12

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि घाव उनके लुब्बे से फूट कर बहा। मस्जिद में बनू ग़िफ़ार के भी कुछ ख़ेमे थे। वे यह देखकर चौंके कि उनकी ओर ख़ून बहकर आ रहा है। उन्होंने कहा, ख़ेमे वालो ! यह क्या है जो तुम्हारी ओर से हमारी ओर आ रहा है?

देखा तो हज़रत साद के घाव से ख़ून की धार बह रही थी, फिर उसी से उनकी मौत हो गई।[1]

सहीह मुस्लिम और सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि साद बिन मुआज़ रज़ि० की मौत से रहमान का अर्श हिल गया।[2]

इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अनस रज़ि० से एक हदीस रिवायत की है और उसे सही भी क़रार दिया है कि जब हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा उठाया गया, तो मुनाफ़िक़ों ने कहा, इनका जनाज़ा कितना हल्का है।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, उसे फ़रिश्ते उठाए हुए थे।[3]

बनू क़ुरैज़ा के घेराव के दौरान एक मुसलमान शहीद हुए, जिनका नाम ख़ल्लाद बिन सुवैद है। यह वही सहाबी हैं जिन पर बनू क़ुरैज़ा की एक औरत ने चक्की का पाट फेंक मारा था। इनके अलावा हज़रत उकाशा के भाई अबू सनान बिन मुहसिन ने घेराव के दौरान वफ़ात पाई।

जहां तक हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का मामला है, तो वह छः रात लगातार स्तून से बंधे रहे। उनकी बीवी हर नमाज़ के वक़्त आकर खोल देती थीं और वह नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फिर उसी स्तून से बंध जाते थे।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सुबह तड़के उनकी तौबा उतरी। उस वक़्त आप उम्मे सलमा रज़ि० के मकान में थे।

हज़रत अबू लुबाबा का बयान है कि उम्मे सलमा ने अपने हुजरे के दरवाज़े पर खड़े होकर मुझसे कहा, ऐ अबू लुबाबा ! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली।

यह सुनकर सहाबा उनहें खोलने के लिए उछल पड़े, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के अलावा कोई और न खोलेगा। चुनांचे

---

1. सहीह बुख़ारी 2/591
2. वही, 1/536, सहीह मुस्लिम 2/294, जामेअ तिर्मिज़ी 2/225
3. जामेअ तिर्मिज़ी 2/225

जब नबी सल्ल० फ़ज्र की नमाज़ के लिए निकले और वहां से गुज़रे तो उन्हें खोल दिया।

यह ग़ज़वा ज़ीकादा में पेश आया, पचीस दिन तक क़ायम रहा।[1] अल्लाह ने इस ग़ज़वे और ग़ज़वा ख़ंदक़ के बारे में सूरः अह्ज़ाब में बहुत-सी आयतें उतारीं और दोनों ग़ज़वों के अहम अंशों पर अपनी राय दी। मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के हालात बयान फ़रमाए, दुश्मन के अलग-अलग गिरोहों में फूट और पस्त हिम्मती का ज़िक्र किया और अह्ले किताब की बद-अह्दी के नतीजों को स्पष्ट किया।

---

1. इब्ने हिशाम 2/237, 238, ग़ज़वे के सविस्तार विवरण के लिए देखिए इब्ने हिशाम 2/233-273, सहीह बुख़ारी 2/590-591, ज़ादुल मआद 2/72-73, 74 मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 287, 288, 289, 290

ग़ज़वा अहज़ाब और क़ुरैज़ा के बाद की जंगी मुहिमें

1. सलाम बिन अबी हुक़ैक़ का क़त्ल

सलाम बिन अबी हुक़ैक़ का उपनाम अबू राफ़ेअ था, यहूदियों के उन बड़े अपराधियों में था, जिन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों को भड़काने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था और माल और रसद से उनकी मदद की थी।[1]

इसके अलावा रसूलुल्लाह सल्ल० को कष्ट भी पहुंचाया था, इसलिए जब मुसलमान बनू क़ुरैज़ा से फ़ारिग़ हो चुके, तो क़बीला ख़ज़रज के लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से उसके क़त्ल की इजाज़त चाही। चूंकि इससे पहले काब बिन अशरफ़ का क़त्ल क़बीला औस के कुछ सहाबियों के हाथों हो चुका था, इसलिए क़बीला ख़ज़रज की ख़्वाहिश थी कि ऐसा ही कोई कारनामा हम भी अंजाम दें। इसलिए उन्होंने इजाज़त मांगने में जल्दी की।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इजाज़त दे दी, लेकिन ताकीद फ़रमा दी कि औरतों और बच्चों को क़त्ल न किया जाए। इसके बाद पांच आदमियों पर आधारित एक छोटी से टुकड़ी अपनी मुहिम पर रवाना हुई। ये सबके सब क़बीला ख़ज़रज की शाखा बनू सलमा से ताल्लुक़ रखते थे और उनके कमांडर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक थे।

इस टुकड़ी ने सीधे ख़ैबर का रुख़ किया, क्योंकि अबू राफ़ेअ का क़िला वहीं था। जब क़रीब पहुंचे तो सूरज डूब चुका था और लोग अपने ढोर-डंगर लेकर वापस हो चुके थे। अब्दुल्लाह बिन अतीक ने कहा, तुम लोग यहीं ठहरो, मैं जाता हूं और दरवाज़े के पहरेदार के साथ कोई चुभता बहाना अपनाता हूं, मुम्किन है अन्दर हो जाऊं।

इसके बाद वह तशरीफ़ ले गए और दरवाज़े के क़रीब जाकर सर पर कपड़ा डालकर यों बैठ गए, जैसे ज़रूरत पूरी कर रहे हैं। पहरेदार ने ज़ोर से पुकारकर कहा, ओ ऐ अल्लाह के बन्दे! अगर अन्दर आना हो तो आ जाओ, वरना मैं दरवाज़ा बन्द करने जा रहा हूं।

अब्दुल्लाह बिन अतीक कहते हैं मैं अन्दर घुस गया और छिप गया। जब सब

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/343

लोग अन्दर आ गए तो पहरेदार ने दरवाज़ा बन्द करके एक खूंटी पर चाबियां लटका दीं। (कुछ देर बाद जब हर ओर सुकून हो गया तो) मैंने उठकर चाबियां लीं और दरवाज़ा खोल दिया। अबू राफ़ेअ ऊपर छत पर रहता था और वहां मज्लिस जमा करती थी। जब मज्लिस के लोग चले गए तो मैं उसके कोठे की ओर चढ़ा। मैं जो कोई भी दरवाज़ा खोलता था, उसे अन्दर की ओर से बन्द कर लेता था।

मैंने सोचा कि अगर लोगों को मेरा पता लग भी गया, तो अपने पास उनके पहुंचने से पहले पहले अबू राफ़ेअ को क़त्ल कर लूंगा। इस तरह मैं उसके पास पहुंच तो गया (लेकिन) वह अपने बाल-बच्चों के बीच एक अंधेरे कमरे में था और मुझे मालूम न था कि वह उस कमरे में किस जगह है।

इसलिए मैंने कहा अबू राफ़ेअ !

उसने कहा, यह कौन है ?

मैंने झट आवाज़ की तरफ़ लपक कर उस पर तलवार की एक चोट लगाई, लेकिन मैं उस वक़्त हड़बड़ाया हुआ था, इसलिए कुछ न कर सका। इधर उसने ज़ोर की चीख़ मारी। मैं झट कमरे से बाहर निकल गया और ज़रा दूर ठहरकर फिर आ गया और (आवाज़ बदलकर) बोला—

अबू राफ़ेअ ! यह कैसी आवाज़ थी ?

उसने कहा, तेरी मां बर्बाद हो। एक आदमी ने अभी मुझे इस कमरे में तलवार मारी है।

अब्दुल्लाह बिन अतीक कहते हैं कि अब मैंने एक ज़ोरदार चोट लगाई, जिससे वह ख़ून में लत-पत हो गया, लेकिन अब भी मैं उसे क़त्ल न कर सका था, इसलिए मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर दबा दिया और वह उसकी पीठ तक जा रहा। मैं समझ गया कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है, इसलिए अब मैं एक-एक दरवाजा खोलता हुआ वापस हुआ और एक सीढ़ी के पास पहुंचकर यह समझते हुए कि ज़मीन तक पहुंच चुका हूं, पांव रखा, तो नीचे गिर पड़ा। चांदनी रात थी, पिंडुली सरक गई। मैंने पगड़ी से उसे कस कर बांधा, और दरवाज़े पर आकर बैठ गया और जी ही जी में कहा कि आज जब तक यह मालूम न हो जाए कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है, यहां से नहीं निकलूंगा।

चुनांचे मुर्ग़ ने जब बांग दी तो मौत की ख़बर देनेवाला क़िले की दीवार पर चढ़ा और ऊंची आवाज़ से पुकारा कि मैं हिजाज़ वालों के ताजिर (व्यापारी) अबू राफ़ेअ की मौत की ख़बर दे रहा हूं।

अब मैं अपने साथियों के पास पहुंचा और कहा, भाग चलो। अल्लाह ने अबू

राफ़ेअ का काम तमाम कर दिया। चुनांचे मैं नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको पूरी बात बताई, तो आपने फ़रमाया, अपना पांव फैलाओ।

मैंने अपना पांव फैलाया। आपने उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा, फिर ऐसा लगा, जैसे कोई पीड़ा थी ही नहीं।[1]

यही सहीह बुख़ारी की रिवायत है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत यह है कि अबू राफ़ेअ के घर में पांचों सहाबी घुसे थे और सबने उसके क़त्ल में शिर्कत की थी और जिस सहाबी ने उसके ऊपर तलवार का बोझ डालकर क़त्ल किया था, वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस थे।

उस रिवायत में यह भी बताया गया है कि उन लोगों ने अबू राफ़ेअ को रात में क़त्ल कर दिया और अब्दुल्लाह बिन अतीक की पिंडुली टूट गई तो उन्हें उठा लाए और क़िले की दीवार के आर-पार एक जगह चश्मे की नहर गई हुई थी, उसी में घुस गए।

उधर यहूदियों ने आग जलाई और हर ओर दौड़-दौड़कर देखा, जब निराश हो गए तो मक़्तूल के पास वापस पलट आए।

सहाबा किराम रज़ि० वापस हुए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक को लादकर रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में ले आए।[2]

इस सरीया (फ़ौजी मुहिम) की रवानगी ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा सन् 05 हि० में अमल में आई थी।[3]

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहज़ाब और क़ुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ हो गए और जंगी अपराधियों से निमट चुके तो उन क़बीलों और बद्दुओं को सिखाने के लिए हमले शुरू किए जो सुख-शान्ति स्थापित नहीं होने दे रहे थे और ताक़त के इस्तेमाल के बग़ैर शांत नहीं रह सकते थे।

नीचे इसी सिलसिले की लड़ाइयों और मुहिमों का थोड़े में ज़िक्र किया जा रहा है।

2. सरीया मुहम्मद बिन मस्लमा

अहज़ाब व क़ुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ होने के बाद यह पहला सरीया है, जिसकी रवानगी अमल में आई। यह तीस आदमियों पर सम्मिलित मुहिम थी।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/577
2. इब्ने हिशाम 2/274, 275
3. रहमतुल लिल आलमीन 2/223, और ग़ज़वा अहज़ाब में बताये गए दूसरे स्रोत

इस सरीया को नज्द के अन्दर बकरात के इलाक़े में ज़रीया के आस-पास क़रता नामी जगह पर भेजा गया था। ज़रीया और मदीना के दर्मियान सात रात का फ़ासला है। रवानगी 10 मुहर्रम सन् 06 हि० को अमल में आई थी और निशाना बनू बक्र बिन किलाब की एक शाखा थी।

मुसलमानों ने छापा मारा तो दुश्मन के सारे लोग भाग निकले। मुसलमानों ने बकरियां और चौपाए हांक लिए और मुहर्रम में एक दिन बाक़ी था कि मदीना आ गए। ये लोग बनू हनीफ़ा के सरदार समामा बिन असाल हनफ़ी को भी गिरफ़्तार कर लाए थे। वह मुसैलमा कज़्ज़ाब के हुक्म से भेष बदलकर नबी सल्ल० को क़त्ल करने निकले थे।[1] लेकिन मुसलमानों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और मदीना लाकर मस्जिदे नबवी के एक खम्भे से बांध दिया।

नबी सल्ल० तशरीफ़ लाए तो पूछा, समामा तुम्हारे नज़दीक क्या है?

उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद! मेरे नज़दीक ख़ैर (भलाई) है। अगर तुम क़त्ल करो तो एक ख़ून वाले को क़त्ल करोगे और अगर एहसान करो तो एक क़द्र करने वाले पर एहसान करोगे और अगर माल चाहते हो, तो जो चाहे मांग लो।

इसके बाद आपने उन्हें उसी हाल पर छोड़ दिया।

फिर आप दोबारा गुज़रे तो फिर वही सवाल किया और समामा ने फिर वही जवाब दिया।

इसके बाद आप तीसरी बार गुज़रे, तो फिर वही सवाल और जवाब हुआ।

आपने सहाबा से फ़रमाया कि समामा को आज़ाद कर दो। उन्होंने आज़ाद कर दिया। समामा मस्जिदे नबवी के क़रीब खजूर के एक बाग़ में गए, ग़ुस्ल किया और आपके पास वापस आकर मुसलमान हो गए, फिर कहा, ख़ुदा की क़सम! इस धरती पर कोई चेहरा मेरे नज़दीक आपके चेहरे से ज़्यादा नापसन्दीदा न था, लेकिन अब आपका चेहरा दूसरे तमाम चेहरों से पसन्दीदा और प्रिय हो गया है और ख़ुदा की क़सम! धरती पर कोई दीन मेरे नज़दीक आपके दीन से ज़्यादा पसन्दीदा न था, मगर अब आपका दीन दूसरे तमाम दीनों से ज़्यादा पसन्दीदा हो गया है। आपके सवारों ने मुझे इस हालत में गिरफ़्तार किया था कि मैं उमरे का इरादा कर रहा था।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने उन्हें ख़ुशख़बरी दी और हुक्म दिया कि उमरा कर लें। जब वह क़ुरैश के शहर में पहुंचे तो उन्होंने कहा कि समामा! तुम बद-बदीन

1. सीरत हलबीया 2/297

हो गए हो ?

समामा ने कहा, नहीं, बल्कि मैं मुहम्मद सल्ल० के हाथ पर मुसलमान हो गया हूं। और सुनो, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारे पास से गेहूं का एक दाना नहीं आ सकता, जब तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० उसकी इजाज़त न दे दें।

यमामा मक्का वालों के लिए खेत की हैसियत रखता था। हज़रत समामा ने वतन जाकर मक्का के लिए ग़ल्ला रवाना करना बन्द कर दिया, जिससे क़ुरैश बड़ी कठिनाई में पड़ गए और रसूलुल्लाह सल्ल० को रिश्तेदारी का वास्ता देते हुए लिखा कि समामा को लिख दें कि वह ग़ल्ले की रवानगी बन्द न करें। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ऐसा ही किया।[1]

3. ग़ज़वा बनू लह्यान

बनू लह्यान वही हैं जिन्होंने रजीअ नामी जगह पर दस सहाबा किराम रज़ि० को धोखे से घेरकर आठ को क़त्ल कर दिया था और दो को मक्का वालों के हाथों बेच दिया था, जहां वे बेदर्दी से क़त्ल कर दिए गए थे, लेकिन चूंकि उनका इलाक़ा हिजाज़ के अन्दर बहुत दूर मक्का की सरहदों से क़रीब वाक़े था और उस वक़्त मुसलमानों और क़ुरैश और अरबों के दर्मियान बड़ा संघर्ष चल रहा था, इसलिए रसूलुल्लाह सल्ल० उस इलाक़े में बहुत अन्दर तक घुसकर 'बड़े दुश्मन' के क़रीब चले जाना मुनासिब नहीं समझते थे, लेकनि जब कुफ़्फ़ार के अलग-अलग गिरोहों के दर्मियान फूट पड़ गई, उनके इरादे कमज़ोर पड़ गए और उन्होंने हालात के सामने बड़ी हद तक घुटने टेक दिए, तो आपने महसूस किया कि अब बनू लह्यान से रजीअ के मक़्तूलों का बदला लेने का वक़्त आ गया है।

चुनांचे आपने रबीउल अव्वल या जुमादल ऊला सन् 06 हि० में दो सौ सहाबा के साथ उनका रुख़ किया, मदीना में हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को अपना जानशीं बनाया और ज़ाहिर किया कि आप शाम देश का इरादा रखते हैं।

इसके बाद आप धावा बोलते हुए अमज और असफ़ान के दर्मियान बत्नेग़रान नामी एक घाटी में, जहां आपके सहाबा किराम को शहीद किया गया था, पहुंचे और उनके लिए रहमत की दुआएं कीं।

उधर बनू लह्यान को आपके आने की ख़बर हो गई थी, इसलिए वे पहाड़ की चोटियों पर निकल भागे और उनका कोई भी आदमी पकड़ में न आ सका।

आप उनकी धरती पर दो दिन ठहरे रहे। इस बीच सरीए भी भेजे, लेकिन

1. ज़ादुल मआद 2/119, सहीह बुख़ारी, हदीस न० 4372 आदि फ़त्हुल बारी 7/688

बनू लह्यान न मिल सके।

इसके बाद आपने अस्फ़ान का रुख़ किया और वहां से दस घुड़सवार कराग़ुल ग़मीम भेजे ताकि क़ुरैश को भी आपके आने की ख़बर हो जाए। इसके बाद आप कुल चौदह दिन मदीने से बाहर गुज़ारकर मदीना वापस आ गए।

इस मुहिम से फ़ारिग़ होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक के बाद एक फ़ौजी मुहिमें और सरीए रवाना किए। नीचे उनका संक्षेप में उल्लेख किया जाता है।

4. सरीया ग़म्र

रबीउल अव्वल या रबीउल आख़र सन् 06 हि० में हज़रत उकाशा बिन मेहरून रज़ि० को चालीस व्यक्तियों की कमान देकर ग़म्र नामी जगह की ओर रवाना किया। यह बनू असद के एक चश्मे का नाम है। मुसलमानों के आने की ख़बर सुनकर दुश्मन भाग गया और मुसलमान उनके दो सौ ऊंट मदीना हांक लाए।

5. सरीया ज़ुल क़िस्सा न० 1

उसी रबीउल अव्वल या रबीउल आख़र सन् 06 हि० में हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा के नेतृत्व में दस लोगों की एक टुकड़ी ज़ुलक़िस्सा की ओर रवाना की गई। यह जगह बनू सालबा के पड़ोस में स्थित थी। दुश्मन जिसकी तायदाद एक सौ थी, इधर-उधर छिप गया और जब सहाबा किराम सो गए, तो अचानक हमला करके उन्हें क़त्ल कर दिया, सिर्फ़ मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु बच निकलने में सफल हो सके, वह भी घायल होकर।

6. सरीया ज़ुल क़िस्सा न० 2

मुहम्मद बिन मस्लमा के साथियों की शहादत के बाद रबीउल आख़र सन् 06 हि० ही में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ुल क़िस्सा की ओर भेजा। वह चालीस लोगों को साथ लेकर उक्त सहाबा किराम की शहादतगाह की ओर चले और रात पैदल सफ़र करके सुबह सवेरे ही, बनू सालबा के पास पहुंचते ही छापा मार दिया, लेकिन बनू सालबा इस तेज़ी से पहाड़ों में भागे कि मुसलमानों की पकड़ में न आ सके, सिर्फ़ एक आदमी पकड़ा गया और वह मुसलमान हो गया, अलबत्ता मवेशी और बकरियां हाथ आईं।

7. सरीया जमूम

यह सरीया ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में रबीउल आख़र सन् 06 हि० में जमूम की ओर रवाना किया गया। जमूम मर्रज़्ज़हरान (वर्तमान फ़ातिमा घाटी) में बनू सुलैम के एक चश्मे का नाम है।

हज़रत ज़ैद रज़ि० वहां पहुंचे तो क़बीला मुज़ैना की एक औरत, जिसका नाम हलीमा था, पकड़ में आ गई। उसने बनू सुलैम की एक जगह का पता बताया, जहां से बहुत से मवेशी, बकरियां और क़ैदी हाथ आए। हज़रत ज़ैद यह सब लेकर मदीना वापस आए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस मुज़नी औरत को आज़ाद करके उससे शादी कर ली।

8. सरीया अीस

यह सरीया एक सौ सत्तर सवारों पर सम्मिलित था और इसे भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में जुमादल ऊला सन् 06 हि० में अीस की ओर भेजा गया था। इस मुहिम में क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का माल हाथ आया, जो रसूलुल्लाह के दामाद हज़रत अबुल आस के नेतृत्व में सफ़र कर रहा था। अबुल आस उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे। वह गिरफ़्तार तो न हो सके, लेकिन भाग कर सीधे मदीना पहुंचे और हज़रत ज़ैनब की पनाह लेकर उनसे कहा कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० से कहकर क़ाफ़िले का माल वापस दिला दें।

हज़रत जैनब रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने यह बात पेश की तो आपने किसी तरह का दबाव डाले बिना सहाबा किराम से इशारा किया कि माल वापस कर दें। सहाबा किराम रज़ि० ने थोड़ा-ज़्यादा, छोटा-बड़ा जो कुछ था, सब वापस कर दिया।

अबुल आस सारा माल लेकर मक्का पहुंचे, अमानतें उनके मालिकों के हवाले कीं, फिर मुसलमान होकर मदीना तशरीफ़ लाए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने पहले ही निकाह पर हज़रत ज़ैनब को उनके हवाले कर दिया, जैसा कि सहीह हदीस से साबित है।[1]

आपने पहले ही निकाह की बुनियाद पर इसलिए हवाले किया था कि उस वक़्त तक कुफ़्फ़ार पर मुसलमान औरतों के हराम किए जाने का हुक्म उतरा नहीं था और एक हदीस में यह जो आया है कि आपने नए निकाह के साथ विदा

1. देखिए सुनन अबू दाऊद, मय शरह औनुल माबूद, बाब इला मता तुरद्दु अलैहि इमरातुहू इज़ा अस ल-म बादहू

किया था या यह कि छः वर्ष के बाद विदा किया था, तो यह न मानी के एतबार से सही है, न सनद के एतबार से[1], बल्कि दोनों पहलुओं से कमज़ोर है।

और जो लोग इसी कमज़ोर हदीस के क़ायल हैं, वे एक विचित्र आपस में टकराने वाली बात कहते हैं। वह कहते हैं कि अबुल आस सन् 08 हि० के आख़िर में मक्का-विजय से कुछ पहले मुसलमान हुए थे। फिर यह भी कहते हैं कि सन् 08 हि० के शुरू में हज़रत ज़ैनब का इंतिक़ाल हो गया था, हालांकि अगर ये दोनों बातें सही मान ली जाएं, तो विरोधाभास बिल्कुल स्पष्ट है।

सवाल यह है कि ऐसी स्थिति में अबुल आस के इस्लाम लाने और हिजरत करके मदीना पहुंचने के वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ि० ज़िंदा ही कहां थीं कि उन्हें उनके पास नए निकाह के ज़रिए या पुराने निकाह की बुनियाद पर अबुल आस के हवाले किया जाता।

हमने इस विषय पर बुलूग़ुल मराम में बड़े विस्तार में वार्ता की है।[2]

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सोचा भी नहीं जा सकता कि आप हुदैबिया का समझौता कर लेने के बावजूद क़ुरैश के क़ाफ़िले पर छापा मारने के लिए मुसलमानों को भेजेंगे। सीरत लिखने वाले तमाम विद्वान इस पर सहमत हैं। इस समझौते को मुसलमानों ने नहीं, बल्कि क़ुरैश ने भंग किया था।

मशहूर साहिबे मग़ाज़ी मूसा बिन उक़बा का रुझान इस ओर है कि यह घटना सन् 07 हि० में अबू बसीर और उनके साथियों के हाथों घटी, लेकिन यह न सहीह हदीस के अनुसार है, न कमज़ोर हदीस के।

9. सरीया तुरफ़ या तुरक़

यह सरीया भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में जुमादल आख़र में तुरफ़ या तुरक़ नामी जगह की ओर भेजा गया। यह जगह बनू सालबा के इलाक़े में थी। हज़रत ज़ैद के साथ सिर्फ़ पन्द्रह आदमी थे, लेकिन बद्दुओं ने ख़बर पाते ही भागने का रास्ता अपना लिया। उन्हें ख़तरा था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ला रहे थे। हज़रत ज़ैद को चार ऊंट हाथ लगे और दो चार दिन बाद वापस आए।

---

1. दोनों हदीसों पर कलाम के लिए देखिए तोहफ़तुल अहवज़ी 2/195, 196
2. इस सरीया को इब्नुल हजर ने भी फ़त्हुल बारी में सन् 06 हि० की घटनाओं में गिना है। (7/498)

10. सरीया वादिल क़ुरा

यह सरीया बारह आदमियों पर सम्मिलित था और इसके कमांडर भी हज़रत ज़ैद ही थे। वह रजब सन् 06 हि० में वादिल क़ुरा की ओर रवाना हुए। मक़्सद दुश्मन की गतिविधियों का पता लगाना था, मगर वादिल क़ुरा के रहने वालों ने उन पर हमला करके नौ सहाबा को शहीद कर दिया और सिर्फ़ तीन बच सके, जिनमें एक ख़ुद हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[1]

11. सरीया ख़ब्त

इस सरीया का ज़माना रजब 08 हि० बताया जाता है, पर सन्दर्भ बताता है कि यह हुदैबिया से पहले की घटना है।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे तीन सौ सवारों की टीम भेजी। हमारे अमीर अबू उबैदा बिन जर्राह थे। क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का पता लगाना था। हम इस हदीस के दौरान ज़बरदस्त भूख से दोचार हुए, यहां तक कि पत्ते झाड़-झाड़कर खाने पड़े। इसीलिए इसका नाम जैश (सेना की टुकड़ी) ख़ब्त (झाड़े जाने वाले पत्ते) पड़ गया।

आख़िर एक आदमी ने तीन ऊंट ज़िब्ह किए, लेकिन इसके बाद अबू उबैदा ने उसे मना कर दिया। फिर इसके बाद ही समुद्र ने अंबर नामी एक मछली फेंक दी, जिसे हम आधे महीने तक खाते रहे और उसका तेल भी लगाते रहे, यहां तक कि हमारे जिस्म हमारी, ओर फिर पलट आए और तन्दुरुस्त हो गए।

अबू उबैदा रज़ि० ने उसकी पसली का एक कांटा लिया और फ़ौज के अन्दर सबसे लम्बे ऊंट को देखकर आदमी को उस पर सवार किया और वह (सवार होकर) कांटे के नीचे से गुज़र गया। हमने उसके गोश्त के टुकड़े तोशे के तौर पर रख लिए और जब मदीना पहुंचे तो रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसका उल्लेख किया।

आपने फ़रमाया, यह एक रोज़ी थी, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निकाली थी। उसका मांस तुम्हारे पास हो तो हमें भी खिलाओ।

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 2/226, इन सरायों को विस्तार में जानने के लिए रहमतुल लिल आलमीन, ज़ादुल मआद 2/120, 121, 122, और तलक़ीह फ़हूम अहलुल असर की टिप्पणियां 28, 29 देखी जा सकती है।

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ गोश्त भेज दिया[1], घटना का विवरण ख़त्म हुआ।

ऊपर जो यह कहा गया कि इस घटना का सन्दर्भ बताता है कि यह हुदैबिया से पहले का है, इसकी वजह यह है कि हुदैबिया की सुलह के बाद मुसलमान क़ुरैश के किसी क़ाफ़िले से छेड़छाड़ नहीं करते थे।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/625, 626, सहीह मुस्लिम 2/145, 146

ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ या ग़ज़वा मुरीसीअ
सन् 05 हि० या सन् 06 हि०

यह ग़ज़वा (लड़ाई) सामरिक दृष्टि से भारी-भरकम ग़ज़वा नहीं है, पर इस हैसियत से इसका बड़ा महत्व है कि इसमें कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जिनकी वजह से इस्लामी समाज में बेचैनी और हलचल मच गई और जिसके नतीजे में एक ओर मुनाफ़िक़ों का परदा खुला, तो दूसरी ओर ऐसे ताज़ीरी क़ानून उतरे, जिनसे इस्लामी समाज को बुलंदी और पाकीज़गी की एक ख़ास शक्ल मिली। हम पहले ग़ज़वे का ज़िक्र करेंगे, इसके बाद उन घटनाओं का विवरण देंगे।

यह ग़ज़वा, आम तौर से सीरत लिखने वालों के मुताबिक़ सन् 05 हि० में और इब्ने इस्हाक़ के कथनानुसार सन् 06 हि०[1] में हुआ। इसकी वजह यह हुई

---

1. इसकी दलील यह दी जाती है कि इसी ग़ज़वे से वापसी में इफ़्क (हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर झूठी तोहमत लगाए जाने) की घटना घटी और मालूम है कि यह घटना हज़रत ज़ैनब रज़ि० से नबी सल्ल० की शादी और मुसलमान औरतों के लिए परदे का हुक्म आ चुकने के बाद घटी थी। चूंकि हज़रत ज़ैनब की शादी सन् 05 हि० के बिल्कुल आख़िर में यानी ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा 05 हि० में हुई थी और इस बात पर सभी सहमत हैं कि यह ग़ज़वा शाबान ही के महीने में पेश आया था, इसलिए यह 05 हि० का शबान नहीं, बल्कि 06 हि० का शाबान हो सकता है।
दूसरी ओर जो लोग इस ग़ज़वे का ज़माना शाबान 05 हि० बताते हैं, उनकी दलील यह है कि इफ़्क वाली हदीस के अन्दर इफ़्क वालों के सिलसिले में हज़रत साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा रज़ि० के बीच तेज़-तेज़ बातों का ज़िक्र मौजूद है और मालूम है कि साद बिन मुआज रज़ि० सन् 05 हि० के आख़िर में ग़ज़वा बनी क़ुरैज़ा के बाद मौत की गोद में चले गए थे, इसलिए इफ़्क की घटना के वक़्त उनकी मौजूदगी इस बात की दलील है कि यह घटना और यह ग़ज़वा सन् 06 हि० में नहीं, बल्कि सन् 05 हि० में पेश आया।
इसका उत्तर पहले फ़रीक़ ने यह दिया है कि हदीसे इफ़्क में हज़रत साद रज़ि० का उल्लेख रिवायत करने वाले का भ्रम है, क्योंकि यही हदीस हज़रत आइशा रज़ि० से इब्ने इस्हाक़ ने ज़ोहरी की सनद से नक़ल की है, तो इसमें साद बिन मुआज़ के बजाए उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० का उल्लेख है। चुनांचे इमाम अबू मुहम्मद बिन हज़्म फ़रमाते हैं कि बेशक यही सही है और साद बिन मुआज़ का उल्लेख भ्रम है।
(देखिए ज़ादुल मआद 2/115)
लेखक का कहना है कि यद्यपि पहले फ़रीक़ की दलीलों का महत्व है (और इसीलिए

कि नबी सल्ल० को यह सूचना मिली कि बनू मु तक़िल का सरदार हारिस बिन अबी ज़रार आपसे लड़ने के लिए अपने क़बीले और कुछ दूसरे अरबों को साथ लेकर आ रहा है। आपने बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु को हाल मालूम करने के लिए रवाना फ़रमाया। उन्होंने इस क़बीले में जाकर हारिस बिन अबी ज़ुरार से मुलाक़ात और बातचीत की और वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हालात से ख़बरदार किया।

जब आपको ख़बर के सही होने का पूरी तरह विश्वास हो गया, तो आपने सहाबा किराम को तैयारी का हुक्म दिया और बहुत जल्द रवाना हो गए। 2 शाबान को रवानगी हुई।

इस ग़ज़वे में आपके साथ मुनाफ़िक़ों की भी एक जमाअत थी, जो इससे पहले किसी ग़ज़वे में नहीं गई थी।

आपने मदीना का इंतिज़ाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को (और कहा जाता है कि हज़रत अबूज़र को और कहा जाता है कि नुमैला बिन अब्दुल्लाह लैसी को) सौंपा था।

हारिस बिन अबी ज़ुरार ने इस्लामी फ़ौज की ख़बर लाने के लिए एक जासूस भेजा था, लेकिन मुसलमानों ने उसे गिरफ़्तार करके क़त्ल कर दिया।

जब हारिस बिन अबी ज़ुरार और उसके साथियों को अल्लाह के रसूल सल्ल० की रवानगी और अपने जासूस के क़त्ल किए जाने का पता चला, तो वे बड़े भयभीत हुए और जो अरब उनके साथ थे, वे सब बिखर गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुरीसीअ चश्मे तक पहुंचे[1] तो बनू मुस्तलिक़ लड़ने पर तैयार हो गए।

शुरू में हम भी उसी से सहमत थे) लेकिन ध्यान दीजिए तो मालूम होगा कि इन दलीलों का केन्द्र-बिन्दु यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत ज़ैनब रज़ि० की शादी सन् 05 हि० के आख़िर में हुई थी, जबकि कुछ अनुमानों के अलावा इस पर कोई ठोस गवाही मौजूद नहीं है, जबकि इफ़्क की घटना में और इसके बाद हज़रत साद बिन मुआज़ (मृत्यु 05 हि०) का मौजूद होना कई सही रिवायतों से साबित है, जिन्हें भ्रम कहना कठिन है। जबकि हज़रत ज़ैनब की शादी 04 हि० के आख़िर में या सन् 05 के शुरू में होने का ज़िक्र पाया जाता है, इसलिए इफ़्क की घटना और बनू मुस्तलिक़ का ग़ज़वा शाबान 05 हि० में होना बिल्कुल संभव है।

1. मुरीसीअ—क़दीद के चारों तरफ़ समुद्र-तट के क़रीब बनू मुस्तलिक़ के एक चश्मे का नाम था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम ने भी सफ़बन्दी कर ली। पूरी इस्लामी फ़ौज के झंडाबरदार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु थे और ख़ास अंसार का फरेरा हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में था, कुछ देर फ़रीक़ों में तीरों का तबादला हुआ।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से सहाबा किराम ने अचानक एक साथ हमला कर दिया और जीत गये। मुश्रिक हारे, उनमें से कुछ मारे भी गए। औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया गया। मवेशी और बकरियां भी हाथ आईं। मुसलमानों का सिर्फ़ एक आदमी मारा गया, जिसे एक अंसारी ने दुश्मन का आदमी समझकर मार दिया था।

इस ग़ज़वे के बारे में सीरत लिखने वालों का बयान यही है, लेकिन अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि यह भ्रम है, क्योंकि इस ग़ज़वे में लड़ाई नहीं हुई थी। बल्कि आपने चश्मे के पास उन पर छापा मारकर औरतों-बच्चों और माल-मवेशी पर क़ब्ज़ा कर लिया था, जैसा कि सहीह के अन्दर है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनुल मुस्तलिक़ पर छापा मारा और वे ग़ाफ़िल थे (आख़िर तक)[1]

क़ैदियों में हज़रत ज़ुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं, जो बनुल मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार की बेटी थीं। वह साबित बिन क़ैस के हिस्से में आईं। साबित ने उन्हें मुकातिब बना लिया।[2]

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ओर से तैशुदा रक़म अदा करके उनसे शादी कर ली। इस शादी की वजह से मुसलमानों ने बनुल मुस्तलिक़ के एक सौ घरानों को, जो मुसलमान हो चुके थे, आज़ाद कर दिया, कहने लगे कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ससुराल के लोग हैं।[3]

यह है इस ग़ज़वे की कहानी। बाक़ी रहीं वे घटनाएं, जो इस ग़ज़वे में घटीं, तो चूंकि उनकी बुनियाद अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों का सरदार और उसके साथी थे, इसलिए ग़लत न होगा कि पहले इस्लामी समाज के भीतर उनकी भूमिका और रवैए की एक झलक पेश कर दी जाए और बाद में घटनाओं का

1. देखिए सहीह बुख़ारी, किताबुल इत्क़ 1/345, फ़त्हुल बारी 5/303, 7/431
2. मुकातिब उस ग़ुलाम या लौंडी को कहते हैं जो अपने मालिक से यह तै कर ले कि वह एक तैशुदा रक़म मालिक को अदा करके आज़ाद हो जाएगा।
3. ज़ादुल मआद 2/112, 113, इब्ने हिशाम 2/289, 290, 294, 295

सविस्तार उल्लेख हो ।

ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ से पहले मुनाफ़िक़ों का रवैया

हम कई बार उल्लेख कर चुके हैं कि अब्दुल्लाह बिन उबई को इस्लाम और मुसलमानों से आम तौर से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास तौर से बड़ी चिढ़ थी । चूंकि औस और ख़ज़रज उसके नेतृत्व पर सहमत हो चुके थे और उसकी ताजपोशी के लिए मूंगों का ताज बनाया जा रहा था कि इतने में मदीने में इस्लाम की किरणें पहुंच गईं और लोगों की तवज्जोह इब्ने उबई से हट गई, इसलिए उसे एहसास था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बादशाही छीन ली है ।

उसकी यह जलन और चिढ़ हिजरत के शुरू ही से स्पष्ट थी, जबकि अभी उसने इस्लाम ज़ाहिर भी नहीं किया था, फिर इस्लाम ज़ाहिर करने से पहले एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गधे पर सवार हज़रत साद बिन उबादा के पूछने के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक मज्लिस से गुज़र हुआ, जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबई भी था। उसने अपनी नाक ढक ली और बोला—

'हम पर धूल न उड़ाओ ।'

फिर जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज्लिस वालों पर क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई तो कहने लगा, आप अपने घर में बैठिए, हमारी मज्लिस में हमें न घेरिए ।[1]

यह इस्लाम के ज़ाहिर करने से पहले की बात है, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद जब उसने हवा का रुख़ देखकर इस्लाम ज़ाहिर कर दिया, तब भी वह अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों का दुश्मन ही रहा और इस्लामी समाज में बिखराव पैदा करने और इस्लाम की आवाज़ कमज़ोर करने के लगातार उपाय सोचता रहा । वह इस्लाम के दुश्मनों से बड़ा निष्ठापूर्वक संपर्क रखता था, चुनांचे बनू क़ैनुक़ाअ के मामले में बड़े बेढंगेपन से हस्तक्षेप किया था । (जिसका उल्लेख पिछले पन्नों में आ चुका है)

इसी तरह उसने उहुद के ग़ज़वे में भी दुष्टताई, वायदे का पूरा न करना, मुसलमानों में फूट, उनकी सफ़ों में बेचैनी, और खलबली पैदा करने की कोशिशें की थीं, (इसका भी उल्लेख हो चुका है)

1. इब्ने हिशाम 1/584, 587, सहीह बुख़ारी 2/924, सहीह मुस्लिम 2/109

उस मुनाफ़िक़ के मकर व फ़रेब का यह आलम था कि यह अपने इज़हारे इस्लाम के बाद हर शुक्रवार को जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शिक्षा देने के लिए तशरीफ़ लाते तो पहले खुद खड़ा हो जाता और कहताः लोगों यह तुम्हारे मध्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। अल्लाह ने उनके द्वारा तुम्हें इज़्ज़त व इहतेराम बख़्शा है। इसलिए उनकी मदद करो। उन्हें ताक़त पहुंचाओ और उनकी बात सुनो और मानो। उसके बाद बैठ जाता और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ कर शिक्षा देते। फिर उसकी ठिटाई और बे हयाई उस समय इन्तेहा को पहुँच गई जब जंगे उहुद के बाद प्रथम शुक्रवार आया क्योंकि-यह मनुष्य इस युद्ध में अपनी बदतरीन दगाबाज़ी के बावजूद शिक्षा से पहले-फिर खड़ा हो गया और वही बातें दोहरानी आरम्भ कीं जो इससे पहले कहा करता था। लेकिन अबकी बार मुसलमानों ने हर प्रकार से उसका कपड़ा पकड़ लिया और कहाः ओ अल्लाह के दुशमन बैठ जा। तूने जो हरकतें की हैं उसके बाद अब तू इस लायक नहीं रह गया है। इस पर वह लोगों की गरदनें फंलाँगता हुआ और यह बड़बड़ाता हुआ बाहर निकल गया कि मैं उन साहब की ताईद के लिए उठा तो मालूम होता है कि मैंने कोई मुजरिमाना बात कह दी। इत्तेफ़ाक़ से दरवाज़े पर एक अन्सारी से मुलाक़ात हो गयी। उन्होंने कहा तेरा नष्ट हो। वापिस चल! रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म तेरे लिए मग़फ़ेरत की दुआ कर देंगे। उसने कहा खुदा की क़सम मैं नहीं चाहता कि वह मेरे लिए दुआऐ मग़फ़िरत करें।

इसके पश्चात ईब्न उबई ने बनो नज़ीर से भी राब्ता क़ायम कर रखा था। और उनसे मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ दर परदह साज़िशें किया करता था।

इसी तरह ईब्न उबई और उसके साथियों ने ख़न्दक़ की लड़ाई में मुसलमानां के अन्दर बेचैनी और खलबली मचाने और उन्हें मरउब व दहशत ज़दह करने के लिए तरह तरह के जतन किये थे। जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने सुरह अहज़ाब की आयात में किया है।

"और जब मुनाफ़िक़ीन तथा वह लोग जिनके दिलों में बीमारी है कह रहे थे कि हमसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो वायदे किया था वह झूठा थाः और जब उनमें से एक गुरूह कह रहा था कि ऐ यसरबि वालो! अब तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए पलट चलो। उधर

लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए पलट चलो और उनका एक फ़रीक़ यह कहकर नबी से इजाज़त तलब कर रहा था कि हमारे घर खुले पड़े हैं, (यानी उनकी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं) हालांकि वे खुले पड़े न थे, ये लोग सिर्फ़ भागना चाहते थे और अगर शहर के हर तरफ़ से उन पर धावा बोल दिया गया होता और उनसे फ़िले (में शिर्कत) का सवाल किया गया होता, तो ये उसमें जा पड़ते और मुश्किल ही से कुछ रुकते। उन्होंने इससे पहले अल्लाह को वचन दिया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह को दिए गए वचन की पूछताछ होकर रहनी है। आप कह दीजिए कि तुम मौत या क़त्ल से भागोगे, तो यह भगदड़ तुम्हें फ़ायदा न देगी और ऐसी शक्ल में फ़ायदा उठाने का थोड़ा ही मौक़ा दिया जाएगा। आप कह दें कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर वह तुम्हारे लिए बुरा इरादा करे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और ये लोग अल्लाह के सिवा किसी और को हामी व मददगार नहीं पाएंगे। अल्लाह तुममें से उन लोगों को अच्छी तरह जानता है, जो रोड़े अटकाते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारी ओर आओ और जो लड़ाई में सिर्फ़ थोड़ा-सा हिस्सा लेते हैं, जो तुम्हारा साथ देने में बड़े कंजूस हैं। जब ख़तरा आ पड़े तो आप देखेंगे कि आपकी ओर इस तरह दीदे फेर-फेरकर देखते हैं, जैसे मरने वाले पर मौत छा रही है और जब ख़तरा टल जाए तो माल व दौलत के लालच में आपका स्वागत तेज़ी के साथ चलती हुई ज़ुबानों से करते हैं। ये लोग सच तो यह है कि ईमान ही नहीं लाए हैं, इसलिए अल्लाह ने इनके अमल अकारत कर दिए और अल्लाह पर यह बात आसान है। ये समझते हैं कि हमलावर गिरोह अभी गए नहीं हैं और अगर वे (फिर पलट कर) आ जाएं, तो ये चाहेंगे कि बद्दुओं के बीच बैठे तुम्हारी ख़बर पूछते रहें और अगर ये तुम्हारे बीच रहें, तो कम ही लड़ाई में हिस्सा लेंगे।' (33 : 13-20)

इन आयतों में मौक़े के मुताबिक़ मुनाफ़िक़ों की सोच, व्यवहार, मनोविज्ञान, स्वार्थ, और अवसरवाद का एक व्यापक चित्र खींच दिया गया है।

इन सबके बावजूद यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों, तात्पर्य यह कि सारे ही इस्लाम-विरोधियों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि इस्लाम के ग़लबे की वजह भौतिक समृद्धि, हथियार, फ़ौज और तायदाद की ज़्यादती नहीं है, बल्कि इसकी वजह वह ख़ुदापरस्ती और नैतिक मूल्य हैं, जिनसे पूरा इस्लामी समाज और इस्लाम धर्म से ताल्लुक़ रखने वाला हर व्यक्ति लाभ उठा रहा है। इन इस्लाम विरोधियों को यह भी मालूम था कि इस फ़ैज़ (पवित्र लाभ) का स्रोत अल्लाह के रसूल सल्ल० का शुभ व्यक्तित्व है, जो इन नैतिक मूल्यों का

चमत्कार की हद तक सबसे श्रेष्ठ आदर्श है।

इसी तरह ये इस्लाम शत्रु चार-पांच साल तक संघर्षरत रहकर यह भी समझ चुके थे कि इस दीन और इसके पोषकों को हथियारों के बल पर मिटाना संभव नहीं हैं, इसलिए उन्होंने शायद यह तै किया कि नैतिक पहलू को बुनियाद बनाकर इस धर्म के ख़िलाफ़ बड़े पैमाने पर प्रोपगंडे की लड़ाई छेड़ दी जाए और इसका पहला ख़ास निशाना अल्लाह के रसूल सल्ल० के व्यक्तित्व को बनाया जाए।

चूंकि मुनाफ़िक़ मुसलमानों की पंक्ति में पांचवां कालम थे, मदीना ही के अन्दर रहते थे, मुसलमानों से निःसंकोच मिल-जुल सकते थे और उनकी भावनाओं को किसी भी 'उचित' समय पर आसानी से भड़का सकते थे, इसलिए इस प्रचार की ज़िम्मेदारी उन मुनाफ़िक़ों ने अपने सर ली, या उनके सर डाली गई और अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने इसके नेतृत्व का बेड़ा उठाया।

उनका यह प्रोग्राम उस वक़्त ज़रा ज़्यादा खुलकर सामने आया, जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ दी और नबी सल्ल० ने उनसे शादी की।

चूंकि अरब का चलन यह चला आ रहा था कि वे मुतबन्ना (मुंहबोले बेटे) को अपने सगे लड़के का दर्जा देते थे और उसकी बीवी को सगे बेटे की बीवी की तरह हराम समझते थे, इसलिए जब नबी सल्ल० ने हज़रत ज़ैनब से शादी की, तो मुनाफ़िक़ों को नबी सल्ल० के ख़िलाफ़ हल्ला-दंगा करने के लिए अपनी समझ से दो कमज़ोर पहलू हाथ आए—

एक यह कि हज़रत ज़ैनब आपकी पांचवीं बीवी थीं, जबकि क़ुरआन ने चार से ज़्यादा बीवियां रखने की इजाज़त नहीं दी है, इसलिए यह शादी कैसे सही हो सकती है?

दूसरे यह कि ज़ैनब आपके बेटे, यानी मुंहबोले बेटे की बीवी थीं, इसलिए अरब चलन के मुताबिक़ उनसे शादी करना बड़ा संगीन जुर्म और ज़बरदस्त गुनाह था। चुनांचे इस सिलसिले में ख़ूब प्रचार किया गया और तरह-तरँह की कहानियां गढ़ी गईं। कहने वालों ने यहां तक कहा कि मुहम्मद ने ज़ैनब को अचानक देखा और उनके सौन्दर्य से इतने प्रभावित हुए कि नक़द दिल दे बैठे और उनके बेटे ज़ैद को इसका ज्ञान हुआ तो उन्होंने ज़ैनब का रास्ता मुहम्मद के लिए ख़ाली कर दिया।

मुनाफ़िक़ों ने इस कहानी का इतनी ताक़त से प्रचार किया कि इसका प्रभाव हदीस की किताबों और तफ़्सीरों में अब तक देखा जा सकता है। उस वक़्त यह

सारा प्रचार कमज़ोर और भोले-भाले मुसलमानों के अन्दर इतना प्रभावी हुआ कि आख़िरकार क़ुरआन मजीद में इसके बारे में स्पष्ट आयतें उतरीं, जिनमें छिपे सन्देहों की बीमारी का पूरा-पूरा इलाज था। इस प्रकार के फैलाव का अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि सूर: अहज़ाब का आरंभ ही इस आयत से हुआ—

'ऐ नबी सल्ल० ! अल्लाह से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से न दबो, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।' (33 : 1)

यह मुनाफ़िक़ों की हरकतों और कार्रवाइयों की ओर एक उचटता-सा इशारा और उनकी एक छोटी-सी रूपरेखा है। नबी सल्ल० ये सारी हरकतें सब्र, नर्मी और मुरव्वत के साथ सहन कर रहे थे, क्योंकि उन्हें तजुर्बा था कि मुनाफ़िक़ क़ुदरत की ओर से रह-रहकर रुसवा किए जाते रहेंगे, चुनांचे इर्शाद है—

'वे देखते नहीं कि उन्हें हर साल एक बार या दो बार फ़ित्ने में डाला जाता है, फिर न तो वे तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं।' (9 : 126)

ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ में मुनाफ़िक़ों की भूमिका

जब ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ पेश आया और मुनाफ़िक़ भी उसमें शरीक हुए, तो उन्होंने ठीक वही किया जो अल्लाह ने इस आयत में फ़रमाया है—

'अगर वे तुम्हारे अन्दर निकलते, तो तुम्हें और ज़्यादा बिगाड़ ही से दोचार करते और फ़ित्ने की खोज में तुम्हारे अन्दर दौड़-भाग करते।' (9 : 47)

चुनांचे इस ग़ज़वे में उन्हें भड़ास निकालने के दो अवसर मिले, जिससे फ़ायदा उठाकर उन्होंने मुसलमानों की सफ़ों में ख़ाली बेचैनी और बिखराव पैदा कर दिया और नबी सल्ल० के ख़िलाफ़ सबसे गन्दा प्रचार किया। इन दोनों मौक़ों का कुछ विवेचन इस तरह है—

1. मदीना से सबसे ज़्यादा ज़लील आदमी को निकालने की बात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ से फ़ारिग़ होकर अभी मरीसीअ सोते पर ठहरे ही थे कि कुछ लोग पानी लेने गए। उन्हीं में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का एक मज़दूर भी था, जिसका नाम जहजाह ग़िफ़ारी था। पानी पर एक और व्यक्ति सनान बिन वब्र जोहनी से उसकी धक्कम-धक्का हो गई और दोनों लड़ पड़े, फिर जोहनी ने पुकारा—

'ऐ अंसार के लोगो ! मदद को पहुंचो।'

और जहजाह ने आवाज़ दी, 'ऐ मुहाजिरो ! मदद को आओ।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (ख़बर पाते ही वहां तशरीफ़

ले गए और फ़रमाया मैं तुम्हारे अन्दर मौजूद हूं और जाहिलियत की पुकार पुकारी जा रही है? इसे छोड़ दो, यह बदबूदार है।

इस घटना की ख़बर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को हुई, तो ग़ुस्से से भडक उठा, और बोला, क्या इन लोगों ने ऐसी हरकत की है? ये हमारे इलाक़े में आकर अब हमारे ही विरोधी और दुश्मन बन गए हैं। ख़ुदा की क़सम, हमारी और उनकी हालत पर वही कहावत सही उतरती है, जो पहलों ने कही हैं कि अपने कुत्तों को पाल-पोसकर मोटा-ताज़ा करो, ताकि वह तुमको फाड़ खाए। सुनो, ख़ुदा की क़सम! अगर हम मदीना वापस हुए, तो हममें का सबसे इज़्ज़तदार आदमी सबसे ज़लील आदमी को निकाल बाहर करेगा, फिर हाज़िर लोगों की तरफ़ तवज्जोह करके बोला—

'यह मुसीबत तुमने खुद मोल ली है। तुमने इन्हें अपने शहर में उतारा और अपने माल बांट कर दिए। देखो, तुम्हारे हाथों में जो कुछ है अगर उसे देना बन्द कर दो, तो ये तुम्हारा शहर छोड़कर कहीं और चलते बनेंगे।'

उस वक़्त मज्लिस में एक नवजवान सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म भी मौजूद थे। उन्होंने आकर अपने चचा को पूरी बात कह सुनाई। उनके चचा ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़बर दी।

उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० भी मौजूद थे, बोले, हुज़ूर सल्ल०! अब्बास बिन बिश्र से कहिए कि उसे क़त्ल कर दें।

आपने फ़रमाया, उमर! यह कैसे मुनासिब रहेगा, लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल कर रहा है। नहीं, बल्कि तुम कूच का एलान कर दो।

यह ऐसा वक़्त था जिसमें आप कूच नहीं फ़रमाया करते थे। लोग चल पड़े तो हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ख़िदमत में हाज़िर हुए और सलाम करके अर्ज़ किया कि आज आपने बे-वक़्त कूच फ़रमाया है।

आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारे साहब (यानी इब्ने उबई) ने जो कुछ कहा है, तुम्हें उसकी ख़बर नहीं हुई?

उन्होंने मालूम किया कि उसने क्या कहा है?

आपने फ़रमाया, उसका ख़्याल है कि अगर वह मदीना वापस हुआ तो सबसे इज़्ज़तदार आदमी सबसे ज़लील आदमी को मदीना से निकाल बाहर करेगा।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप अगर चाहें तो उसे मदीने से निकाल बाहर करें। ख़ुदा की क़सम! वह ज़लील है और आप इज़्ज़तदार हैं। इसके बाद उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उसके साथ नर्मी बरतिए, क्योंकि

ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह आपको हमारे पास उस वक़्त ले आया, जब उसकी क़ौम उसकी ताजपोशी के लिए मूंगों का ताज तैयार कर रही थी। इसलिए अब वह समझता है कि आपने उससे उसकी बादशाही छीन ली है।

फिर आप शाम तक पूरा दिन और सुबह तक पूरी रात चलते रहे, बल्कि अगले दिन के आरंभिक समयों में इतनी देर तक सफ़र जारी रखा कि धूप से तक्लीफ़ होने लगी। इसके बाद उतरकर पड़ाव डाला गया तो लोग धरती पर देह रखते ही बेख़बर सो गए। आपका मक़्सद भी यही था कि लोगों को सुकून के साथ बैठकर गप लड़ाने का मौक़ा न मिले।

इधर अब्दुल्लाह बिन उबई को जब पता चला कि ज़ैद बिन अरक़म ने भांड़ा फोड़ दिया है तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया और अल्लाह की क़सम खाकर कहने लगा कि उसने जो बात आपको बताई है, वह बात मैंने नहीं कही है और न उसे ज़ुबान पर लाया हूं।

उस वक़्त वहां अंसार के जो लोग मौजूद थे, उन्होंने भी कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी वह लड़का है, मुम्किन है उसे भ्रम हो गया हो और उस व्यक्ति ने जो कुछ कहा था, उसे ठीक-ठीक याद न रख सका हो। इसलिए आपने इब्ने उबई की बात सच मान ली।

हज़रत ज़ैद का बयान है कि इस पर मुझे ऐसा दुख हुआ कि ऐसा दुख मुझे कभी न हुआ होगा। मुझे ऐसा सदमा पहुंचा कि मैं अपने घर में बैठा रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सूरः मुनाफ़िक़ीन उतारी, जिसमें दोनों बातों का उल्लेख है—

'ये मुनाफ़िक़ वही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर ख़र्च न करो, यहां तक कि वे चलते बनें।'

'और ये मुनाफ़िक़ कहते हैं कि अगर हम मदीना वापस हुए तो उससे इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा।'

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि (इसके बाद) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे बुलवाया, और ये आयतें पढ़कर सुनाईं, फिर फ़रमाया, 'अल्लाह ने तुम्हारी पुष्टि कर दी।'[1]

इस मुनाफ़िक़ के बेटे, जिनका नाम अब्दुल्लाह ही था, इसके बिल्कुल विपरीत बहुत ही नेक और बेहतर सहाबा में से थे। उन्होंने अपने बाप से अलगाव अपना

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी 1/499, 2/227, 228 229, सहीह मुस्लिम हदीस न० 2584, तिर्मिज़ी, हदीस न० 3312, इब्ने हिशाम 2/290, 291, 292

लिया और मदीना के दरवाज़े पर तलवार सौंत कर खड़े हो गए। जब उनका बाप अब्दुल्लाह बिन उबई वहां पहुंचा, तो उससे बोले, ख़ुदा की क़सम! आप यहां से आगे नहीं बढ़ सकते, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० इजाज़त दे दें, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० इज़्ज़त वाले हैं और आप ज़लील हैं।

इसके बाद जब नबी सल्ल० वहां तशरीफ़ लाए तो आपने उसको मदीना में दाखिल होने की इजाज़त दी और तब बेटे ने बाप का रास्ता छोड़ा।

अब्दुल्लाह बिन उबई के उन्हीं बेटे हज़रत अब्दुल्लाह ने आपसे यह भी अर्ज़ किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप इसे क़त्ल करने का इरादा रखते हों, तो मुझे फ़रमाइए, ख़ुदा की क़ंसम! मैं उसका सर आपकी सेवा में हाज़िर कर दूंगा।[1]

2. इफ़्क की घटना

इस ग़ज़वे की दूसरी महत्वपूर्ण घटना इफ़्क की घटना है। इस घटना का सार यह है कि—

अल्लाह के रसूल सल्ल० का चलन यह था कि सफ़र में जाते हुए पाक बीवियों के बीच कुरआ डालते, जिसका कुरआ निकल आता, उसे साथ ले जाते। इस ग़ज़वे में हज़रत आइशा रज़ि० का नाम निकला और आप उन्हें साथ ले गए।

ग़ज़वे से वापसी में एक जगह पड़ाव डाला गया, हज़रत आइशा रज़ि० अपनी ज़रूरत के लिए गईं और अपनी बहन का हार, जिसे मांगकर ले गई थीं, खो बैठीं। एहसास होते ही तुरन्त वहां वापस गईं, जहां हार ग़ायब हुआ था।

इसी बीच वे लोग आए जो आपका हौदज ऊंट पर लादा करते थे। उन्होंने समझा आप हौदज के भीतर मौजूद हैं, इसलिए उसे ऊंट पर लाद दिया और हौदज के हल्केपन पर न चौंके, क्योंकि हज़रत आइशा रज़ि० अभी नव उम्र थीं। बदन मोटा और बोझल न था। साथ ही यह बात भी थी कि कई आदमियों ने मिलकर हौदज उठाया था, इसलिए भी हल्केपन पर ताज्जुब न हुआ। अगर सिर्फ़ एक या दो आदमी उठाते, तो उन्हें ज़रूर महसूस हो जाता।

बहरहाल हज़रत आइशा रज़ि० हार ढूंढकर पड़ाव पर पहुंचीं, तो पूरी फ़ौज जा चुकी थी और मैदान ख़ाली पड़ा था, न कोई पुकारने वाला था, न जवाब देनेवाला। वे इस ख़्याल से वहीं बैठ गईं कि लोग उन्हें न पाएंगे, तो पलटकर वहीं खोजने आएंगे, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत हर जगह ग़ालिब है, वह अर्श से

1. इब्ने हिशाम, वही, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 277

जो तदबीर चाहता है, करता है।

चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० की आंख लग गई और वह सो गईं। फिर सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ियल्लाहु अन्हु की यह आवाज़ सुनकर जागीं कि 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० अल्लाह के रसूल सल्ल० की बीवी...?

सफ़वान फ़ौज के पिछले हिस्से में सोए थे, उनकी आदत भी ज़्यादा सोने की थी। उन्होंने जब हज़रत आइशा रज़ि० को देखा तो पहचान लिया, क्योंकि वह परदे का हुक्म आने से पहले भी उन्हें देख चुके थे। उन्होंने 'इन्ना लिल्लाहि...' पढ़ी और अपनी सवारी बिठा कर हज़रत आइशा रज़ि० के क़रीब कर दी। हज़रत आइशा रज़ि० चुपचाप उस पर सवार हो गईं।

हज़रत सफ़वान ने इन्ना लिल्लाहि के सिवा ज़ुबान से एक शब्द न निकाला। चुपचाप सवारी की नकेल थामी और पैदल चलते हुए फ़ौज में आ गए।

यह ठीक दोपहर का वक़्त था और फ़ौज पड़ाव डाल चुकी थी। उन्हें इस स्थिति में आता देखकर अलग-अलग लोगों ने अपने-अपने ढंग से समीक्षा की और अल्लाह के दुश्मन ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई को भड़ास निकालने का एक ओर मौक़ा मिल गया।

चुनांचे उसके मन में निफ़ाक़ और जलन की जो चिंगारी सुलग रही थी, उसने उसके इस छिपे रोग को और उभार दिया, यानी बदकारी की तोहमत गढ़कर घटनाओं के ताने-बाने बुनना, तोहत के ख़ाके में रंग भरना और उसे फैलाना, बढ़ाना और उधेड़ना और बुनना शुरू किया। उसके साथी भी इसी बात को बुनियाद बनाकर उसका क़रीबी आदमी बनने की कोशिश करने लगे और जब मदीना आए तो इन तोहमत तराशों ने ख़ूब जमकर प्रचार किया।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप थे, कुछ बोल नहीं रहे थे, लेकिन जब लम्बे अर्से तक वह्य न आई, तो आपने हज़रत आइशा रज़ि० से अलग हो जाने के बारे में अपने ख़ास सहाबा से मश्विरा किया।

हज़रत अली रज़ि० ने स्पष्ट शब्दों में कहे बग़ैर इशारों-इशारों में मश्विरा दिया कि आप उनसे अलगाव अपनाकर किसी और से शादी कर लें, लेकिन हज़रत उसामा रज़ि० वग़ैरह ने मश्विरा दिया कि आप उनसे अलग न हों और दुश्मनों की बात पर कान न धरें।

इसके बाद आपने मिंबर पर खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन उबई की दी जा रही पीड़ाओं से निजात दिलाने की ओर तवज्जोह दिलाई। इस पर हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने अपना रुझान बताया और कहा, इजाज़त दीजिए उसे क़त्ल कर दें, लेकिन हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० में, जो अब्दुल्लाह बिन उबई के क़बीला

ख़ज़रज के सरदार थे, क़बीला गत अभिमान जाग गया और दोनों ओर से तेज़-तेज़ बातें हो गईं, जिसके नतीजे में दोनों क़बीले भड़क उठे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बड़ी मुश्किल से चुप किया, फिर ख़ुद भी चुप हो गए।

उधर हज़रत आइशा रज़ि० का हाल यह था कि वह ग़ज़्वे से वापस आते ही बीमार पड़ गईं और एक महीने तक बराबर बीमार रहीं। उन्हें इस तोहमत के बारे में कुछ भी मालूम न था। अलबत्ता उन्हें यह बात खटकती रहती थी कि बीमारी की हालत में अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर जो मेहरबानी होनी चाहिए थी, अब वह नज़र नहीं आ रही है।

बीमारी ख़त्म हुई, तो वह एक रात उम्मे मिस्तह के साथ ज़रूरत पूरी करने के लिए मैदान में गईं। संयोग कि उम्मे मिस्तह अपनी चादर में फंसकर फिसल गईं, इस पर उन्होंने अपने बेटे को बद-दुआ दी।

हज़रत आइशा रज़ि० ने इस हरकत पर उन्हें टोका, तो उन्होंने हज़रत आइशा रज़ि० को यह बतलाने के लिए कि मेरा बेटा भी प्रोपगंडे के जुर्म में शरीक है, तोहमत की पूरी घटना कह सुनाई।

हज़रत आइशा रज़ि० ने वापस आकर इस ख़बर का ठीक-ठीक पता लगाने के उद्देश्य से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मां-बाप के पास जाने की इजाज़त चाही, फिर इजाज़त पाकर मां-बाप के पास तशरीफ़ ले गईं और स्थिति स्पष्ट रूप से मालूम हो गई, तो बे-अख़्तियार रोने लगीं और फिर दो दिन और एक रात रोते-रोते गुज़र गए। इस बीच न नींद का सुर्मा लगाया, न आंसू की झड़ी रुकी।

वह महसूस करती थीं कि रोते-रोते कलेजा फट जाएगा। इसी हालत में रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ लाए। कलिमा शहादत के बाद ख़ुत्बा दिया और इसके बाद यह फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी और ऐसी बात का पता लगा है। अगर तुम इससे बरी हो, तो अल्लाह बहुत जल्द तुम्हारे बरी होने का एलान फ़रमा देगा और अगर ख़ुदा न करे तुमसे कोई गुनाह हो गया है, तो तुम अल्लाह से माफ़ी मांगो और तौबा करो, क्योंकि बन्दा जब अपने गुनाह का इक़रार करके अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता है, तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है।

उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि० के आंसू एकदम थम गए और अब उन्हें आंसू की एक बूंद भी महसूस न हो रही थी।

उन्होंने अपने मां-बाप से कहा कि वे आपको जवाब दें। लेकिन उनकी समझ में न आया कि क्या जवाब दें। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने ख़ुद ही कहा, अल्लाह की क़सम! मैं जानती हूं कि यह बात सुनते-सुनते आप लोगों के दिलों में अच्छी तरह बैठ गई है और आप लोगों ने इसे बिल्कुल सच समझ लिया है, इसलिए अगर मैं यह कहूं कि मैं बरी हूं—और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं—तो आप लोग मेरी बात सच न समझेंगे और अगर मैं किसी बात को मान लूं, हालांकि अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं उससे बरी हूं, तो आप लोग सही मान लेंगे। ऐसी स्थिति में, ख़ुदा की क़सम! मेरे लिए और आप लोगों के लिए वही मसल है कि जिसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद (पिता) ने कहा था कि—

'सब्र ही बेहतर है और तुम लोग जो बनाते हो, इस पर अल्लाह की मदद चाहिए।'

इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० दूसरी ओर पलटकर लेट गईं और उसी वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य उतरने का सिलसिला शुरू हो गया।

फिर जब यह सिलसिला बन्द हुआ, तो आप मुस्करा रहे थे और आपने पहली बात जो फ़रमाई, वह यह थी कि 'ऐ आइशा! अल्लाह ने तुम्हें बरी कर दिया।'

इस पर (ख़ुशी से) उनकी मां बोलीं (आइशा!) हुज़ूर सल्ल० की जानिब उठो (शुक्रिया अदा करो)।

उन्होंने अपने बरी होने पर और अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुहब्बत पर पूरा भरोसा करते हुए नाज़ भरे अन्दाज़ में कहा, 'अल्लाह की क़सम! मैं तो उनकी ओर न उठूंगी और सिर्फ़ अल्लाह का गुणगान करूंगी।'

इस मौक़े पर इफ़्क की घटना से मुताल्लिक़ जो आयतें अल्लाह ने उतारीं, वे सूरः नूर की दस आयतें हैं जो 'इन्नल्लज़ी-न जाअ बिल इफ़्कि. . . से शुरू होती हैं।

इसके बाद तोहमत लगाने के जुर्म में मिस्तह बिन असासा, हस्सान बिन साबित और हम्ना बिन्त जह्श को अस्सी-अस्सी कोड़े मारे गए[1], अलबत्ता ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई की पीठ इस सज़ा से बच गई, हालांकि तोहमत लगाने वालों में वही सूची में सबसे ऊपर था और उसने इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण

1. इस्लामी क़ानून यही है कि जो व्यक्ति किसी पर ज़िना की तोहमत लगाए और सबूत न पेश करे, उसे अस्सी कोड़े मारे जाएं।

भूमिका निभाई थी।

उसे सज़ा न देने की वजह या तो यह थी कि जिन लोगों पर हदें क़ायम कर दी जाती हैं (यानी शरई सज़ा दे दी जाती है), वह उनके लिए आख़िरत के अज़ाब में कमी और गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और अब्दुल्लाह बिन उबई को अल्लाह ने आख़िरत में बड़ा अज़ाब देने का एलान फ़रमा दिया था, या फिर वही मस्लहत काम कर रही थी, जिसकी वजह से उसे क़त्ल नहीं किया गया।[1]

इस तरह एक महीने के बाद मदीने का वातावरण शंका-संदेह, और दुख-बेचैनी के बादलों से साफ़ हो गया और अब्दुल्लाह बिन उबई इस तरह रुसवा हुआ कि दोबारा सर न उठा सका।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि इसके बाद जब वह कोई गड़बड़ करता, तो ख़ुद उसकी क़ौम के लोग उस पर ग़ुस्सा होते, उसकी पकड़ करते और उसे सख़्त-सुस्त कहते। इस स्थिति को देखकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ उमर! क्या ख़्याल है? अल्लाह की क़सम! अगर तुमने उस व्यक्ति को उस दिन क़त्ल कर दिया होता, जिस दिन तुमने मुझसे उसे क़त्ल करने की बात कही थी, तो उस पर बहुत सी नाकें फड़क उठतीं, लेकिन अगर आज उन्हीं नाकों को उसके क़त्ल का हुक्म दिया जाए, तो वे उसे क़त्ल कर देंगी।

हज़रत उमर ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी समझ में ख़ूब आ गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामला मेरे मामले से ज़्यादा बरकतों वाला है।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/364, 2/696, 698, ज़ादुल मआद 2/113, 114, 115, इब्ने हिशाम 2/297-307
2. इब्ने हिशाम 2/293